बुंदेलखंड के लोक नृत्यात्मक गीत

शोधार्थी – श्रीमती श्यामा पंडित

सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र (दिल्ली)

फाइल संख्या - CCRT/JF-3/32/2015

¼2018½

çkDdFku

लोक संगीत के माध्यम से हमारी सामाजिक परम्परायें उनका इतिहास तथा हमारे पूर्वजों के अनुभवों का सार समाज को सहज रूप में प्राप्त होता है, जिससे आने बाली पीढ़ी का जीवन के वो मार्ग सहजता से मिल जाते हैं जिनको बड़ी ही तपस्या से प्राप्त किया गया है। लोकसंगीत का मुख्य स्रोत लोक है, लोक के सहज अनुभव तथा उनके कलात्मक दृष्टिकोण ही लोकगीत लोकनृत्य ,लोक साहित्य ,लोक चित्र के रूप में सामने आते है।

लोक गीत ऐसे ही अनुभवों का सार गर्भित तत्त्व है जो जीवन की हर दशा में मार्गदर्शन ले लिए अपने आप में एक परिपूर्ण ग्रन्थ हैं। हमारे जीवन के प्रत्येक रस से सम्बंधित गीत समाज में प्रचलित है श्रृंगार, शोक, हास्य, वीर, वीभत्स, शांत आदि प्रत्येक रस इन गीतों में मिलता है। जीवन का हर अनुभव इन गीतों में है, ये लोकगीत मानव की प्रत्येक मानसिक अवस्था में उनका साथ देती है ये उनके सुख दुख का साथी है जैसे मानों प्रत्येक व्यक्ति की आपबीती ही इन गीतों में व्यक्त की गई हो।

लोक नृत्यों में प्रयुक्त लोकगीतों की अपनी अलग लय, विषय तथा रोचकता होती है। इसमें जीवन के प्रति निराशा तथा पलायन नहीं होता है अपितु जीवन के कठिन सार तत्त्व भी इन गीतों के रूप में सहज मिल जाते है। ऐतिहासिक घटनायें, पुराणों शास्त्रों के रहस्य, सामजिक जीवन का सौंदर्य तथा उनका संघर्ष सभी इन नृत्य गीतों में दिखता है, साथ ही समसामयिक सामाजिक परिस्थितयों की झलक भी इन गीतों में दिखता है।

नृत्य के साथ जुडके इन गीतों सौन्दर्य और अधिक बढ़ जाता है। नृत्य की मुद्राओं को अर्थ तथा लय देने वाले ये गीत इन नृत्यों की शोभा हैं तथा ये गीत ही नृत्य को अर्थ प्रदान करते है।

बचपन से लोक संगीत से जुड़े रहने के कारण मेरा आकर्षण इन लोकनृत्यात्मक गीतों के प्रति विशेष रहा हैं, क्योंकि ये लोकगीत ही मेरे नृत्य में मेरे मुख मंडल पर भावों को संचार करने के कारक थे। अत इन गीतों को और अधिक समीप से जानने के लिए मैैने फेलोशिप में इस विषय को चुना तथा माता पिता एवं गुरु के सहयोग से इस कार्य को कर रही हूँ।

यह रिसर्च चार अध्यायों में बाँटा गया है । प्रथम अध्याय में मध्य प्रदेश के स्थिति, भौगोलिक संरचना, इतिहास, संस्कृति का अध्ययन किया गया है। अध्याय द्वितीय में बधाई, बरेदी, एवं सैैरा के नृत्यात्मक गीतों का अध्ययन किया गया हैं। अध्याय तृतीय में नोरता, ढिमरयाई,कानड़ा के नृत्यात्मक गीतों का उल्लेख किया गया है। अध्याय चतुर्थ में समस्त नृत्यात्मक गीतों की स्वरलिपि एवं सांगीतिक आधार का अध्ययन किया गया है।

अंत में इस रिसर्च में मैने जो कुछ भी प्रस्तुत किया है वह लोक से ही प्राप्त है तथा उसी को समर्पित है। तथा इस रिसर्च कार्य में जिन–जिन लोगों ने सहयोग किया है उनका विशेष आभार ज्ञापित है।

&–".k&

v/;k;& çFke

अध्ययन क्षेत्र का परिचय
(स्थिति, भौगोलिक संरचना, इतिहास, संस्कृति)
‘cqny[kM d ykd uR;kRed xhr* मेरे कार्य का शीर्षक है।

भारत के हृदय स्थल पर सुशोभित मध्य प्रदेश समस्त रचनात्मक, कलात्मक, सांस्कृतिक, एतिहासिक धरोहरों का गढ़ हैं। भारत का यह क्षेत्र उन समस्त खूबियों से समृद्ध है जिसकी आवश्यकता जन समाज को सभ्य, समृद्ध तथा उन्नत होने के लिए होती है। मध्य प्रदेश भारत को हर तरह से समृद्ध करता है। खनिज संपदा से आच्छादित मध्य प्रदेश संस्कृति के विभिन्न आयाम यथा रीति–रिवाज, इतिहास, रहन–सहन, खान–पान, नृत्य, गीत, फसल, बोली, भाषा, कविता, चित्र, मूर्ति, वेश–भूषा आदि बहुआयामी परंपरा की लंबी यात्रा का दर्शन मध्य प्रदेश की भूमि पर होता है।

यहाँ की संस्कृति में जाग्रत जनता की प्रतीक है, जिस पर गाँवों व खेतों और खलिहानों की छाप है तो वहीं शहरी सभ्यता व शिष्टता का प्रभाव भी स्पष्ट झलकता है। इसमें जन्मभूमि का गौरव इतिहास है तथा यहाँ के यशस्वी वीरों के गाथा की पुकार भी हैं। मध्य प्रदेश की संस्कृति एक विशाल एवं गर्वयुक्त इतिहास हैं। यहाँ की कला, काव्य,गीत, शिल्प आदि समस्त कौशल मातृभूमि की मिट्टी से जुड़ी हुई है। यही कारण है कि संस्कृति का रंग ही अलग हैं। यहाँ की संस्कृति जन–सामान्य के सामूहिक प्रतिभा की प्रतीक है। अतीत पर श्रद्धा रखकर भविष्य की रचनात्मक कल्पना ही मध्य प्रदेश की संस्कृति है।

राजनैतिक एवं भौगोलिक आधार पर मध्य प्रदेश 51 जिले तथा 10 संभागों में विभाजित है, परंतु सांस्कृतिक दृष्टि से मध्य प्रदेश के निम्नलिखित क्षेत्र माने जाते है–

1. मालवा तथा निमाड़ ।
2. बुंदेलखंड।

खनिज संपदा से धनी मध्य प्रदेश अपने लोक संगीत के क्षेत्र में अत्यंत समृद्धशाली है। प्रदेश का हर क्षेत्र लोक संगीत के क्षेत्र में अपनी अलग–अलग विशेषता रखता है। मालवा तथा निमाड़ का लोकसंगीत अपनी अलग विशेषता रखता है तथा बुंदेलखंड में प्रचलित लोक संगीत अपनी अलग विशेषता रखता हैं। भारतीय लोक साहित्य के अंतर्गत बुंदेलखंडी लोक संगीत अपना अलग स्थान हैं। बुंदेलखंडी लोक संगीत का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है।

लोक संगीत के इस व्यापक समुद्र में विभिन्न विधाएँ नदियों के समान अपने–अपने व्यापक स्वरूप को इस समुद्र में समाहित कर इसे समृद्ध करती है। इस विशाल समुद्र में विभिन्न क्षेत्रों से आई ये नदियाँ अपना अस्तित्व विलीन नही करती अपितु अपनी अलग–अलग विशेषता के साथ समुद्र की व्यापकता में वृद्धि करते हुए अपनी महत्वता को बनाए रखती है।

लोक संगीत के इस व्यापक सागर में बुंदेलखंड की विभिन्न कलाएँ यथा लोक गाथा,लोक कथा,लोक गीत, लोक नृत्य आदि समाहित है, जो अपना अलग–अलग व्यापक क्षेत्र में स्वयंसमृद्ध है तथा एक संपूर्णता को धारण किए हुए है। इस लिखित कार्य में हम बुंदेलखंड के लोकनृत्य में प्रयुक्त लोकगीतों का अध्ययन करेंगें।

''लोक गीत वैसे तो मानव समाज के विकास के साथ पनपने वाली मौखिक संपत्ति है, पर उसके भी क्रमशः उत्थान की एक धारा है. सभी देशों में लोक गीतों का विकास समान रूप से हुआ है. ज्यों–ज्यों शब्दों में अभिव्यक्ति का बल और क्षमता आती गयी, लोक–गीतों में संगीत के माध्यम से समाज की भाव धारा प्रकट होती गयी ।''[1]

लोक गीत कोई व्यक्ति नही वरन जन–समूह करता है। यह सहज क्षेत्र का साहित्य है जो कि मुक्तक काव्य होता है। परंपरा में चलकर इनमें नये–नये आयामों का संकलन होता चला गया। इन लोकगीतों की जड़ें बुंदेलखंड के लोक जीवन में बहुत गहरे तक धँसी हुई हैं, जो हमारी बहुत सी सांस्कृतिक मान्यताओं को अपने में सुरक्षित रखे हुए है। बुंदेलखंड के इन गीतों, संस्कृति तथा सभ्यता के रहस्यों का भूतकाल से वर्तमान तक उद्घाटन मिलता है। अतः गौरवशाली इतिहास एवं परिवर्तनीय विकासशील उन्नत समाज की वर्तमान स्थिति बुंदेलखंड के लोकगीतों की सामग्री है। ऋतुओं के बदलाव, उन बदलावों का सहज हृदय पर प्रभाव, रिश्तों की टीस, सुख–दुख, जीवन–मृत्यु की यात्रा, विवाह का उल्लास, मातृत्व की सुख व पीड़ा, उसकी उपेक्षा, खेत–खलिहान, किसान के जीवन का हाल, परिवारिक माहौल आदि समस्त मानवीय संघर्ष, सुख–दुख की कल्पना तथा उनकी अनुभूति ही लोकगीतों के काव्य की भूमि है।

बुंदेली लोकगीतों के अंतर्गत सैरे, फागें, लेदें, दीवारी गीत, कार्तिक गीत, गारी, विवाह गीत, बधाई गीत, श्रमगीत, विदाई गीत, कीर्तन–भजन आदि प्रत्येक अवसर के गीत आते है, जो कि जीवन के प्रत्येक पक्ष को गहराई से छूते है तथा उनको अपने परिपक्व शब्दों तथा मार्मिक धुनों से यथार्थता प्रदान करते है।

[1] भारतीय लोक– साहित्य/ डॉ० श्याम परमार / पृष्ठ – 62

मध्य प्रदेश का बुंदेलखंड अंचल मध्य प्रदेश की संस्कृति का आईना हैं। मध्य भाग में स्थित होने के कारण इसकी अपनी संस्कृति अपना इतिहास है, जो कि अत्यंत ही गौरवशाली व प्राचीन है। नर्मदा नदी यहाँ के लोगों की जीवन रेखा है, जिनका गान गीतों में भी मिलता है।

प्रधान ग्रामीण समाज की अधिकता होने के कारण रहन–सहन तथा वेश–भूषा, परिवेश में ग्रामीण रंग अधिक दिखता है। फसलों पर निर्भरता तथा मजदूरी, बुंदेलखंडी लोकगीतों की विभिन्न विधाओं यथा श्रम गीत, दीवारी गीत, लेद, बम्बुलिया में स्पष्ट देखी जा सकती है।

बुंदेलखंड का जन सामान्य नर्मदा नदी को एक पवित्र नदी मानते हुए उनकी देवी के समान पूजा करता है। वर्षा, भूमि, पशुओं, फसलों आदि पर पूर्ण निर्भर यहाँ का लोक सामान्य, इन सभी उपक्रमों की पूजा करता है, जिन पर इनका जीवन निर्भर है। गाय, बैल आदि की महिमा का गान दीवारी गीतों में अनायास ही मिल जाता है। बुंदेली मानुष अत्याधिक धार्मिक प्रवृति के भी होते हैं। भगवान् के प्रति पूर्ण आस्था तथा अपनी पूर्ण समर्पण के भावना के भाव की झलक विभिन्न लोक गीतों में दिखाई देती है।

समर्पण की भावना जिनको लोकगीतों में परिलक्षित किया जाता है यह लोक को परंपरा से प्राप्त होता है तथा कुछ स्वयं के स्व–अनुभव के प्रेरणा का परिणाम होता है।

"गीत हमारे मनोभावों की अभिव्यक्ति के वे माध्यम है, जिसमें संगीत का पुट धुन के रूप में मिश्रित होता हैं। जब गीत के साथ लोक शब्द का सम्बन्ध हो जाता है, तब उसका व्यक्तिपरक महत्त्व सामूहिक तत्वों में बदल जाता हैं। जो व्यक्ति

कला–गीतों में अपने स्वाभाविक रूप में परिलक्षित होता है वैसा लोक गीतों में नहीं, कारण, लोक गीतों में मानव के समूहगत भावों के अभिव्यंजना होती है"। [2]

इसीलिए बुंदेलखंड में भी लोकगीतों को सामूहिक रूप से इकट्ठे होकर ही गाया जाता है। कभी ये समूह उत्सव गीत को साथ मिलकर गाते है तो कभी प्रतिस्पर्धा के रूप में गीतों में एक से अधिक रसों का समावेश होता हैं ।

"अधिकांश गीतों में एक साथ ही कई रस आ जाते है।"[3]

बुन्देली लोकगीतों में मानवीय समाज की विभिन्न क्रियाकलाप, भाव–सौन्दर्य आदि वर्णन होता है जो कि किसी भी विधा व् शैली में उद्घाटित होता है।

लोकगीतों के माध्यम से "विरही युवकों ने कसक मिटाई है, विधवाओं ने अपने एकाकी जीवन में रस पाया है, पथिकों ने थकावटें दूर की है, किसानों ने अपने खेत जोतें हैं, मजदूरों ने विशाल भवनों पर पत्थर चढ़ाये है और मौजियों ने चुटकुले छोड़े है" । [4]

बुंदेलखंड अंचल में प्रचलित लोकगीतों की अपनी विशिष्ट तथा स्थाई परम्पराएं है, जो लोक सामान्य के धार्मिक तथा सांस्कृतिक भावनाओं से ओत–प्रोत है। "मध्य प्रदेश में निवास करने वाला जन–मानस चाहे वह नगर संस्कृति में रचा–बसा हो या ग्राम्य संस्कृति में, आचार–विचार, धर्म–कर्म, संस्कार, रीती–रिवाज, व्रत–त्यौहार, जन्म–मृत्यु, भजन–पूजन, उपासना, भक्ति, पाप–पुण्य, सौन्दर्य प्रसाधन आदि जीवन के

[2] वही/पृष्ठ –77
[3] बुन्देली लोकगीत उनका वर्गीकरण एवं वैशिष्ट्य/ डॉ० मोतीलाल चौरसिया/ पृष्ठ –33
[4] वही/पृष्ठ–32

क्रियाकलापों से सांस्कृतिक रूप से जुड़ा हुआ है। इन क्रियाकलापों का प्रतिपालन वह किसी न किसी रूप में वर्ष भर क्रमानुसार करता हैं"। [5]

इन सभी रीति–रिवाजों तथा संस्कारों एवं त्योहारों पर निहित तथा इन अवसरों का नजदीक से शोध सार यहाँ के लोक गीतों में प्राप्त होता है। यहाँ के लोकगीतों में बारहमासी बहुआयामी सांस्कृतिक छठा का अवलोकन होता है। विभिन्न उत्सव, व्रत, अनुष्ठान, मेले, प्रेम–बंधन, आराधना, पूजा आदि समस्त विधान लोकगीत के माध्यम से संपन्न होते है।

चैत्र मास से आरम्भ माता की आराधना से शुरू होकर रामनवमी में भक्ति गीतों की अभिव्यक्ति, वैशाख में शादी–ब्याह के विभिन्न गीत, आषाढ़ महीने में वर्षा गीत, सावन में भाई–बहन के प्रेम की झांकी, भादो में विरहनी के विरह की टीस बारिश की बूंदों के साथ निकलती है, क्वार में देवी की आराधना के साथ नौरता नृत्य व् गीतों का महोत्सव, कार्तिक में दिवारी नृत्य व् गायन, मकर संक्रांति में नर्मदा यात्रा के समय बम्बुलिया यात्रा गीत, फाल्गुन में होली की धूम तथा उनसे सम्बंधित गीत, फाग–स्वांग, फसलों के कटने पर परिवार की सम्पन्नता की आशा आदि विभिन्न अवसर पर साल भर महिलाओं व् पुरूषों के द्वारा गीत माध्यम से भावना की अभिव्यक्ति की जाती है।

बुन्देली लोकगीतों में शौर्य, वीर, ओजस्व, श्रम आदि की व्याख्या के अतिरिक्त महिलाओं की कोमल भावनाओं से ओत–प्रोत श्रृंगारिक भावनाएँ भी इन लोकगीतों के माध्यम से व्यक्त होती है। पति से प्रेम–प्रसंग, ससुराल की नोक–झोंक, पुत्र स्नेह, माँ–बाप का स्नेह, प्रत्येक छोटी–छोटी भावनाओं का ह्रदयस्पर्शी वर्णन होता है।

[5] मध्य प्रदेश के लोक संगीत/शरीफ मोहम्मद/पृष्ठ–5

इन सभी लोकगीतों के विभिन्न अवसरों व् प्रसंगों के आधार पर इनका वर्गीकरण किया गया है, जो प्रसंगों या ऋतुओं अथवा जाति या अपने रस मूलक तत्वों के आधार पर समानता रखते है।

"लोकगीतों में मानवीय समाज के क्रियाकलाप, भाव–सौन्दर्य, कला–सौन्दर्य आदि बातों का वर्णन होता है, इसीलिए इनके वर्गीकरण भी भिन्न–भिन्न प्रकार से किये गए है। लेखकों ने विभिन्न दृष्टिकोण अपनाते हुए वर्गीकरण प्रस्तुत किये हैं। इनके माध्यम से समाज मे प्रचलित रीति–रिवाजों का ज्ञान होता है"।[6]

श्री गौरी शंकर द्विवेदी के अनुसार बुन्देली लोकगीतों का विभाजन निम्न प्रकार से होना चाहिए :–

"सैरे – ये आषाढ़ और सावन मास में गाये जाते हैं।
राछरे – ये ज्येष्ठ मास से श्रावण तक।
मलारें और सावन – श्रावण और भाद्रपक्ष में ।
बिलवारी, दिवारी – क्वार और कार्तिक में ।
बाबा या भोला गीत – संक्रांति आदि तीर्थ यात्रा के समय ।
फागें और लेदें – माघ और फाल्गुन में ।
गारी – विवाहादि अवसरों पर ।

इनके अतिरिक्त घास काटते समय, मजदूरी करते समय , चक्की पिसते समय इत्यादि अनेक अवसरों पर भिन्न–भिन्न प्रकार के गीत, भजन दादरे आदि गए जाते है" । [7]

[6] बुन्देली लोकगीत उनका वर्गीकरण एवं वैशिष्ट्य/ डॉ० मोतीलाल चौरसिया/ पृष्ठ–33
[7] वही/पृष्ठ–37

"श्री उमाशंकर शुक्ल ने पौराणिक, कथागीत, संस्कार गीत और नृत्यगीत आदि में सब गीतों को समाहित किया है" ।[8]

"श्री शिवसहाय चतुर्वेदी ने विभिन्न अवसरों पर गाए जाने वाले गीतों को अलग प्रस्तुत किया है– संचत, सोहर, वधाये , सरिया, कुआँपूजन, झुला, चूडाकरण, अन्नप्राशन, लड़कियों के गीत, नौरता, यज्ञोपवीत, संस्कार वैवाहिक , होली, फागे, धार्मिक गीत, मौसम श्रमदान व् विशिष्ट जातियों के गीत "। [9]

देवेन्द्र सत्यार्थी ने बुन्देली लोकगीतों का वर्गीकरण करते हुए कहा है– "यह कहा जा सकता है कि लोकगीतों का बचपन कार्य की छाया में व्यतीत होता है । गीतों की काफी संख्या ऐसी मिलेगी, जिनका जन्म पूजा, पर्व–व्रतों और त्यौहारों के समय होता है । जन्म, विवाह तथा मृत्यु संबंधी शकुन–अपशकुन भूतप्रेतों की पूजा के मन्त्र और गीत जादू–टोने और पशु–पक्षियों तथा पेड़ों संबंधी विश्वास इन सबके अध्ययन से हम बुंदेलखंड की नब्ज पर हाथ रख सकते है । इस श्रेणी के गीत ये हैं –

1. माता के गीत
2. कार्तिक गीत
3. बाबा के गीत
4. नौरता के गीत

वीरगाथाओं का अलग स्थान है, इनमें कथा गीतों के मुख्य विभाग ये हैं–

1. राछरे
2. पवारे

एक और विभाजन यो हो सकता है –

1. लोरियां

[8] वही
[9] वही

2. बच्चों के खेल गीत

फिर संस्कार गीत –

1. सोहरे, मल्हारे
2. बिलवारी जिसे क्वार में गाते हैं ।
3. दिवाली – जो कार्तिक में गाई जाती हैं ।
4. फागें – ये चार प्रकार की होती है, (क) सख्याऊ (ख) खुरयाउ (ग) चौकइयाऊ (घ) छंदयाउ" ।[10]

इसके अलावा रसिया और दादरों को अपना अलग स्थान है, सैरों को तो हम खेल की कविता कह सकते हैं। जातिनुसार विभिन्नताएं भी मिलती है यथा धोबियों के 'धुबयाउ', ढीमरों के ढीमरयाउ और गड़ेरियों के 'गडरयाउ' ।

"डॉ बलभद्र तिवारी ने बुन्देली लोकगीतों का विभाजन उनके वैशिष्ट्य के आधार पर किया है–

1. ऋतू गीत तथा आख्यान गीत आल्हा, कार्तिक के गीत, ढोला माऊ, घमी, सांवरी, पुवारो, पंडवा , सौरंगा सदावक्ष ।
2. उत्सव और त्यौहार : फागें, स्वांग, राई, दिवारी, तीजा, आरती, तुलसी का व्याह ।
3. रीति–रिवाज संबंधी गीत : बनरा, गारी, विदा के गीत, बधाई, भांवर, तेल–सोहरे (जन्मोत्सव मनाते समय गाया जाने वाला गीत) ।
4. श्रम गीत (कार्यों के आधार पर) : दिनरी, बीरौठी, अनबोलना, बिलवारी ।
5. भिक्षावृति के गीत : बसदेवा के गीत (हास्य रस पूर्ण) ।
6. लोक नृत्य के साथ गाये जाने वाले गीत : राई, ढ़िमरयाई, सैरों दिवारी ।
7. यात्रा के समय के गीत : भोला के गीत (बम्बुलियां)।

[10] वही / पृष्ठ–38

8. धार्मिक गीत : प्रभाती, भगतें, जस, गोहें, बीरौठी" ।[11]

सभी विषयों से सम्बंधित गीतों का इस वर्गीकरण में समिल्लित होने के कारण डॉ० बलभद्र तिवारी का ये वर्णन सार्थक प्रतीत होता हैं।

"डॉ० सरला कपूर ने अपने शोध प्रबंध बुंदेलखंड के नरेश कवि में बुन्देली लोकगीतों का निम्न प्रकार से वर्गीकरण किया है –

1. धार्मिक – माता के गीत, कार्तिक गीत, गोहें, लावा के गीत, नौरता, दमेटवा एवं अन्य देवी–देवताओं के भजन ।
2. औत्सोविक – साजन, बनरा, बधाई, सोहरे।
3. सामाजिक – गडरयाउ, विदा, कछयाउ और राछरे ।
4. सामायिक – मल्हारे, सौरें, बिलवाई और फागे।

फागों के प्रकार निम्न हैं – सख्याउ, खरयाउ, चौकढ़याउ, छंदयाउ, खिरें, राहुला, ख्यालफाग, स्वांग, राछरे, दिवारी, दिनरी, उजैकी, चाचरी, अधरी होली, रसिया खेद, दतिया का भाउदी, सावन, बंजारा, कबीर साखी आदि।

5. ऐतिहासिक गीत – रासे, आल्हा, ढोला, मारू, चौपाई।
6. वीररस – सिर्फ कडरवा ही विशेष रूप से सम्मिलित हैं। आल्हा भी वीर रस में आ सकता हैं।"[12]

डॉ० विनोद कुमारी ने अपने शोध ग्रन्थ बुदेलखंडी एवं बघेलखंडी लोकगीतों का सामाजिक–सांस्कृतिक एवं काव्यगत तुलनात्मक अध्ययन में समस्त लोकगीतों को संक्षिप्त रूप में इस प्रकार रखा हैं :–

[11] वही / पृष्ठ–39
[12] वही / पृष्ठ–39

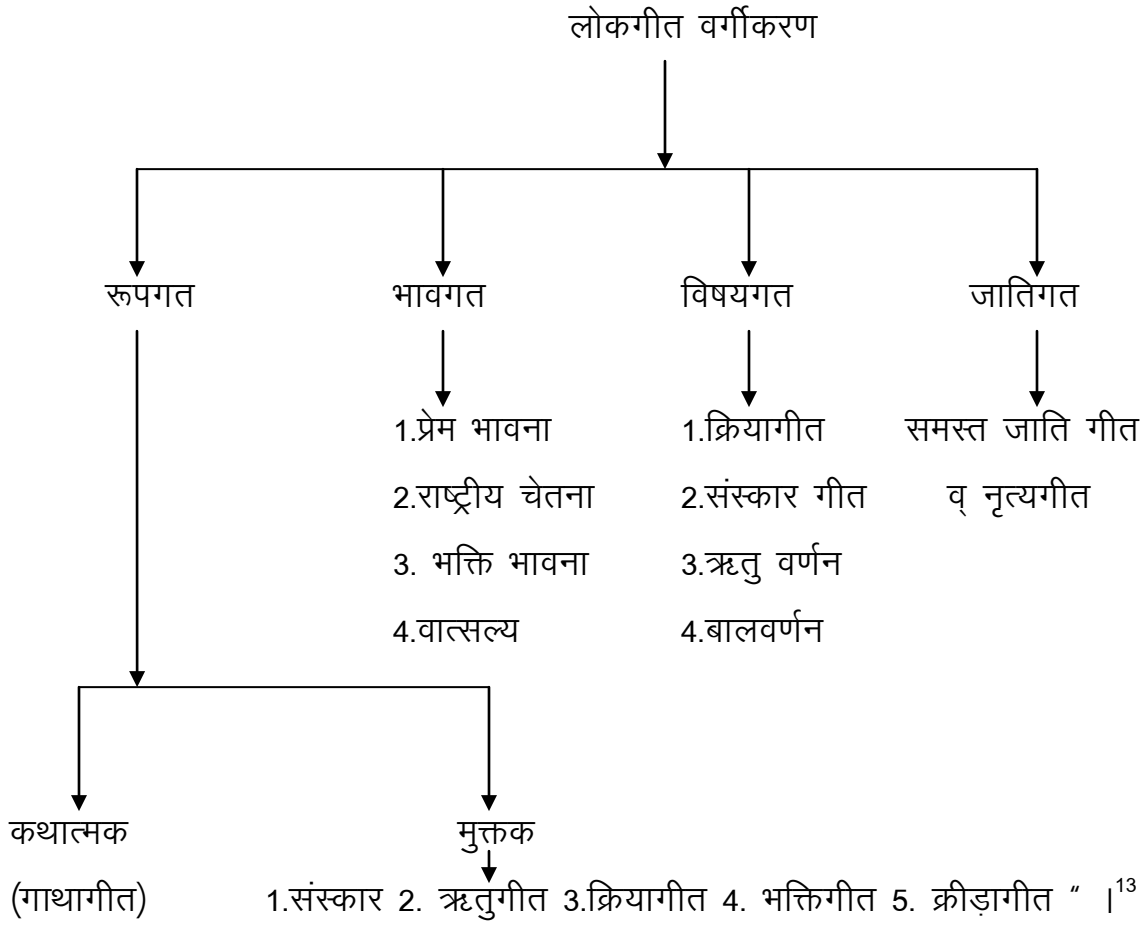
[13]

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता हैं, कि बुन्देली लोकगीतों का वर्गीकरण सभी विद्वानों ने अपने संज्ञान के अनुसार किया है परन्तु हमें यहाँ मात्र नृत्य में गाये जाने वाले गीतों का अध्ययन करना है। विभिन्न विद्वानों ने नृत्य गीतों का उल्लेख अलग अलग प्रकार से किया है। किसी ने नृत्यगीतों को जातिगत गीतों के संगत में रखा है, तो किन्ही विद्वानों ने अनुष्ठान गीतों के रूप में मान्यता प्रदान की है और किन्ही विद्वानों के द्वारा नृत्यगीतों को अलग श्रेणी में रखा है।

बुंदेलखंड के संस्कार गीतों में जीवन का आधार है। जीवन के अलग–अलग पड़ाव पर परम्परानुसार जिन–जिन अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता है यथा

[13] वही / पृष्ठ–40

जन्म से लेकर विवाह, मृत्यु तक के संस्कारों से जुड़े गीतों को संस्कार गीतों के अंतर्गत रखा जाता है। ऋतूगीतों में ऋतुओं से सम्बंधित गीत, खेलगीत के अंतर्गत बच्चों के खेलों में प्रयुक्त गीतों का उल्लेख होता है, भक्तिगीत में जीवन के सत्य तत्वों का उद्‌घाटन होता है।

कथा गीतों में बुंदेलखंड में प्रचलित लोक गाथाओं का गायन यथा अल्हा उदल की कथाओं का गायन किया जाता हैं। जातिगत लोकगीतों के अंतर्गत विभिन्न जातियों द्वारा अलग–अलग विशेषताओं के साथ गीत गाये जाते हैं। अनुष्ठान गीतों में, पर्वों में गाए जाने वाले गीतों को सम्मिलित किया जाता हैं। नृत्यगीत के अंतर्गत गाये जाने वाले गीतों क आधार चाहे जो भी हो यथा श्रृंगार पर आधारित, धार्मिक आधार, अनुष्ठान पर आधारित गीत, जातिगत गीत, परन्तु इन गीतों की अपनी अलग लयात्मकता होती हैं। शब्दों में मुक्तक काव्य की छटा तथा सरस वेग होता है जो नर्तक तथा दर्शक को मनोरंजक आह्लाद देता है। ये गीत शिक्षाप्रद, धार्मिक, श्रृंगारिक, भजन आदि होते है परंतु इसमें जीवन से पलायन की कल्पना या भाव नहीं होता है, अपितु नृत्य की लयात्मकता जीवन की उदासी तथा मायूसी को समाप्त कर उसमे आनंद भर देती है।

बुंदेलखंड में विभिन्न लोकनृत्यों प्रचलन है जिनमें विभिन्न प्रकार के गीतों का गायन होता है। बुंदेलखंड में लोकप्रिय मुख्य लोकनृत्य निम्न प्रकार है :– बधाई नृत्य, राई नृत्य, बरेदी नृत्य, सैरा नृत्य, कानड़ा नृत्य, ढ़िमरयाई नृत्य, नौरता नृत्य आदि ।

बुंदेलखंड के ये समस्त लोकनृत्य मध्य प्रदेश की परंपरा को संजोये हुए है। प्रत्येक नृत्य किसी न किसी परंपरा अथवा रीति–रिवाज से जुड़ा हुआ हैं। इन नृत्यों की वेशभूषा तथा सौबत पुर्णतः बुंदेलखंड के रंग में रंगी हुई हैं। इन नृत्यों में प्रयुक्त गीत पुर्णतः बुंदेलखंड की बोली में होती है। प्रत्येक नृत्य की गीतों की लय अलग–अलग होती है तथा इनके गीतों की लयात्मकता भी भिन्न होती है। आगे के अध्याय में हम इन नृत्यों तथा इनमें प्रयुक्त गीतों का अध्ययन करेंगे।

अध्याय–2

c/kkb] cjnh ,o ljk d uR;kRed xhr

प्रत्येक अंचल की सास्कृतिक असमिता वहां की कलाओं में अभिव्यक्त होती है। हर एक अंचल की लोक संस्कृति की एक खास पहचान होती है। बुन्देलखण्ड अंचल की सांस्कृतिक परम्परा बड़ी समृद्व व प्राचीन है इस लोक सास्कृतिक परम्परा में कलाओं के विविध स्वरूपों के हमें दर्शन होते है लोक कलाओं के अनेक आयाम होते हैं। लोक मन जब प्रसंन्नता से तरगायित हो नाच–गा उठे तो नृत्य गायन लोक कला का स्वरूप ले लेती है ।

मनुष्य जब अपनी शारीरिक चेष्टाओं द्वारा अपने गहनतम मनोभावों को व्यक्त करता है तब वह नृत्य कहलाता है । नृत्य को काव्य का शारीरिक रूप माना जाता है मानव की शारीरिक चेष्टाओं का परिष्कृत रूप ही नृत्य है। हमारे देश में नृत्य की प्रचीनता एवं उसके प्रांरभ के बारे में ऐसा माना जाता है कि वेदकालीन युग से ही नृत्यादि का प्रचलन समाज में है वेदों में कई स्थानों पर ऋषि पत्नियों द्वारा यंज्ञ के चारों ओर समूह में नृत्य प्रदर्शन का उल्लेख मिलता है । इन नृत्य शैलियों के बारे में कुछ विस्तार से नहीं बताया गया है । इन नृत्यों की व्याकरण तथा मुद्राओं का प्रथम उल्लेख भरत मुनिकृत नाट्यशास्त्र में मिलता हैं । कृत युग में स्वयंभू मनवनतंर के अनुसार त्रेता युग में वैवस्वत् मनवंतर के आरंभ हो जाने पर जब संसार के सुख के साथ दुख भी प्रविष्ट हो गया तब भगवान इन्द्र के साथ देवताओं ने ब्रम्हा जी के पास जाकर निवेदन किया कि हमको ऐसा क्रीड़ा लिपिक चाहिये जो देखे और सुने जाने के योग्य हो । ब्रम्हा जी ने देवताओं की प्रार्थना स्वीकार करके ऋग्वेद से पाठ, सामवेद से गीत, यजुर्वेद से अभिनय तथा अथर्ववेद सभी रसों को ग्रहण कर पंचमवेद नाट्यशास्त्र की रचना की।

एवं संकल्प्य भगवान् सर्वान् वेंदाननुस्मरन् ।

नाट्यवेदं ततश्च् के चतुर्वेदाग्ड़सम्भवम् '' ।। 16 ।।[14]

इस नाट्यवेद की शिक्षा ब्रम्हा ने भरत मुनि को प्रदान की तथा भरत मुनि ने अपने सौ पुत्रों को इस नाट्यवेद की शिक्षा दी । ब्रम्हा जी के आदेश पर भरतमुनि ने अपने सौ पुत्रों सहित इस नाट्य की प्रस्तुति भगवान शिव के समक्ष की । शिव ने इस नाट्य की सराहना करते हुए इसमें नृत्य अंग जोड़ा ।

मयापीदं स्मृतं नृत्यं सध्याकालेषु नृत्यता ।

नानाकरण संयुक्तैग्ड़हारैर्विभूषितम् ।।13।।[15]

अर्थात संध्या के समय नृत्य करते हुए जब मैने नृत्य का निर्माण किया तब मैने इसे (नृत्य को) अंगहारों से जो करणों से मिलकर निर्मित होते है युक्त करते हुए और भी सुंदर बनाया ।

शिव ने इन अंगहारों व करणों की शिक्षा तंडु को दी तथा तंडु ने भरत मुनि को –

ततस्तण्डुं समाहूय प्रोक्तवान् भुवनेश्वरः ।।4।।

प्रयोगमंगहाराणां आचक्ष्य भरताय वै '' । [16]

तब शिव ने तंडु को बुलाकर कहा भरतमुनि अंगहारों का विधान बतला दीजिये

रेचका अंगहाराश्च पिण्डीबन्धास्तथैव च ।। 261 ।।

---

[14] नाट्यशास्त्रम/श्री बाबूलाल शुक्ल शास्त्री/चौखम्बा संस्कृत संस्थान /पृ. 6

[15] वही /पृ. 84

[16] वही/पृ. 87

सृष्टा भगवता दत्तास्तण्डवे मुनये तदा ।

तेनापि हि ततः सम्यग्गानभाण्समन्वितः ।। 262 ।।

नृत्त प्रयोगः सृष्टो यः स ताण्डव इति स्मृतः '' ।[17]

इस प्रकार भगवान शिव ने रेचक , अंगहार तथा पिडीं बंधों के सृजन कार्यों को पूर्ण करने के पश्चात् उन्हें तंडु मुनि को प्रदान कर दिया । तब उन तंडु मुनि ने(उन्हे) गान तथा भाण्डवाद्य (वाघ तथा गीत) से ठीक प्रकार से संयुक्त कर जिस नृत्य प्रयोग की सर्जना की वह तांडव नाम से प्रसिद्व हुआ। तंडु के द्वारा उद्भावित होने के कारण उसकी प्रसिद्वी तांडव नाम से हुई ।

तंडु ने यह नृत्य भरतमुनि को सिखाया तथा उधर पार्वती जी ने लास्य नृत्य बाणासुर की पुत्री ऊषा को सिखाया और इस तरह नृत्य का विकास हुआ । भरत के नाट्यशास्त्र में किसी भी नृत्य शैली (शास्त्रीय अथवा लोक) का उल्लेख नही मिलता अपितु नृत्य की व्याकरण का उल्लेख है। इसके अतिरिक्त उन्होंने लोक को शास्त्रीय से अधिक महत्वता प्रदान की है उनके अनुसार –

लक्षणेन विना ब्राहालक्षणाद्विस्तृतं भवेत् ।।

लोक शास्त्रानुसरेण तस्मान्नाट्य प्रवर्तते '' ।[18]

अर्थात शास्त्र लक्षणहीन होने पर नाटक लोक लक्षण मात्र से भी प्रसिद्व हो सकता है इसलिये शास्त्र तथा लोक दोनों के लक्षण के अनुसार नाटय का प्रवर्तन किया जायें ।

[17] वही/पृ 135
[18] वही/पृ. 197

Ykkd uR;kRed xhr :– मध्य प्रदेश की लोक नृत्य परम्परा अत्याधिक वैभवशाली है इन लोक नृत्यों में गाये जाने वाले लोकगीत भी इतने ही अधिक वैभवशाली है । अनेक लोक वाद्यों की मधुरलय , ताल एवं गीत पर विभिन्न रंगीले परिधानों में सजे लोक नर्तकों के मुंह से जब लोकगीतों के बोल उद्घटित होते है और पांव मचलतें है तो मानव मन स्पंदित हुए बिना नहीं रह सकता मध्य प्रदेश के सभी लोक नृत्यों के अपने निर्धारित लोकगीत है जिन्हें लोक नर्तक गण स्वंय नृत्य करते हुए गाते है नृत्य करते समय नृत्य गीत गाने में वादक गणों की भी सक्रिय भागीदारी होती है ।

इन नृत्य गीतों को स्त्री–पुरूष अपनी–अपनी पारी के अनुसार एक के बाद एक गाते है। लोक नृत्यों में गाये जाने वाले गीत इन नृत्यों की आत्मा है यदि लोक नृत्यों से ये नृत्य गीत निकाल दिये जाये तो वे सूखे पेड़ की तरह बेजान हो जाऐगे । वास्तव में नृत्य गीत ही लोक नृत्यों को ऊर्जा देते है । जिससे लोक नर्तकों में नृत्यों के प्रति लगाव उत्पन्न होता है ।

व्यवहारिक रूप से यह पाया गया है कि लोक नृत्यों की अवधि, नृत्यों की मुद्राओं में परिवर्तन लोकगीतों की गति में परिवर्तन के आधार पर ही होती है, जितनी देर तक सवंधित पेतरे का सैरा गीत अथवा कोई अन्य गीत गाया जायेगा उतनी ही अवधि तक नाचा भी जाता है । गीत परिवर्तित होते ही नृत्य भी बदल जाता है । इस स्थिति में नर्तक को ठहरने की आवश्यकता नही होती वरन् सब कुछ स्वभाविक होता है ।

लोक नृत्यों में गाये जाने वाले अधिकांश गीतों में ऊंचे स्वरों के साथ टेर लगाने की स्वभाविक परम्परा है तभी तो रात्रि के पहर मे भी वन प्रांतों को चीर कर इन नृत्य गीतों के स्वर तीन चार कोस तक सुनाई पड़ते है जिससे दूर बैठे गांव में लोगों को यह आभास हो जाता है कि अमुक गांव में आज लोक नृत्य नांचा जा रहा है ।

इन लोक नृत्यों में समाज की जीवनशैली, स्थिति, परम्परा, रीतिरिवाज, सामाजिक संबध, प्रकृति वर्णन, स्त्री की स्थिति, खेती का हाल, मौसम की मार, हास्य–परिहास, उत्सव, त्यौहार, पर्व, रीति, अनरीति, रूपवर्णन, वेशभूषा, परिधान, पशुओं

की उपयोगिता, पौराणिक कथानक, तथा पौराणिक नायकों के चरित्र, जीवन दर्शन, मोक्ष का ज्ञान, लौकिक जीवन की शिक्षा, आदि छोटी से छोटी जीवन की आवश्यकता तथा जीवन में उसके महत्व का वर्णन इन लोक नृत्यात्मक गीतों में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है ।

बधाई नृत्य व इसमें प्रयुक्त नृत्य गीत

मध्यप्रदेश के बुन्देलखण्ड में बधाई नृत्य अंत्यत ही पुराने समय से चली आ रही नृत्य परम्परा है । जिसे बुन्देलखण्ड के प्रत्येक समुदाय में समान रूप से पाया जाता है किसी भी खुशी के अवसर पर जैसे– पुत्र–जन्म, पुत्र–विवाह या कोई मांगलिक अवसर पर बुन्देलखण्ड में बधाई नृत्य करने की परम्परा प्रचलित है ।

''मूल रूप से यह बच्चों के जन्म के अवसर का नृत्य है जो मंगल कामना से ओत–प्रोत है, किन्तु इसे शादी–विवाह के समय भी उल्लास में नाचा जाता है । बधाई नृत्य वास्तव में दिल में एकत्र खुशियों की अभिव्यक्ति का नृत्य है ''।[19]

बुन्देलखण्ड में यह परम्परा है कि जब भी किसी के घर पुत्र अथवा पुत्री का जन्म होता है तो प्रसूता के घर से बधावा के रूप में बच्चे व लड़की के ससुराल वालों के लिए विभिन्न प्रकार सगुन लाए जाते है, दस्टोन का उत्सव मनाया जाता है, जिसमें प्रसूता की ननद भी बधावा लाती है । इस अवसर पर बधाई गाई व नाची जाती है ।

''बधावा के इस अवसर पर जो एकल नृत्य होता है उसे बधाई नृत्य कहते है । नृत्य एकल होता है किन्तु उत्साह और उमंग सम्हाल न सकने के कारण एक ही समय में अनेक नर्तक अलग–अलग नृत्य करने लगते है । बधाई नृत्य में स्त्री व पुरूष

[19] मध्यप्रदेश लोक संगीत/शरीफ मोहम्मद/पृष्ठ–58

दोनों नाचते है, लेकिन स्त्रियों का नृत्य विशेष और मोहक होता है । मुंह पर घूंघट डाले हुए दोनों हाथों से पल्लू को पकड़ कर जब नृत्य किया जाता है तो समधी का आंगन खिल उठता है । दोनो पंजों को मिलाकर कमर में लोच के साथ चक्कर नृत्य होता है ,, ।[20]

अतः बधाई एक उमंग भरा नृत्य है जिसमें पुरूषों के साथ–साथ स्त्रियों की भागीदारी होती है । बच्चे के जन्म के साथ ही बधाई नृत्य विवाह की विभिन्न रस्मों के दौरान भी महिलाओं व पुरूषों के द्वारा नाची व गायी जाती है। इन दो समारोहों के अतिरिक्त यदि किसी व्यक्ति द्वारा अपने किसी आराध्य देव के सामने किसी काम को पूरा कराने के लिए अथवा किसी रोग जैसे चेचक आदि से मुक्ति के मनौती मांगता है तो उसकी मनौती पूरी होने पर वह उस देवी अथवा देवता के सामने नृत्य करता है अथवा करवाता है ।

इस प्रकार बधाई नृत्य जीवन के प्रमुख दो संस्कारों जन्म व विवाह से जुड़ी हुई है । अतः नृत्य को संस्कार विषयक नृत्य कहा जा सकता।

बधाई नृत्य की वेशभूषा व नृत्य के अनुसार कोई अलग से नहीं पहनी जाती है अपितु इसमें बुन्देलखण्ड की पारम्परिक वेशभूषा जो यहां कि स्त्रियों एवं पुरूषों द्वारा स्वाभाविक रूप से पहनी जाती है वहीं इस नृत्य में भी धारण की जाती है। बुन्देलखण्ड में परम्परागत रूप से पुरूष धोती कुर्ता, बंडी , गमछा, आदि धारण करता है एवं महिलायें सूती की साड़ी कांच लगाकर पहनती हैं । यही पारम्परिक वेशभूषा बधाई नृत्य में भी पहनी जाती है । बधाई नृत्य बुन्देलखण्ड के संस्कारों के हिस्सा होने के साथ–साथ आजकल स्टेजों पर भी प्रदर्शित की जाने लगी है फिर भी पारम्परिक बधाई नर्तक अपनी परम्परा का निर्वहन करते हुए बुन्देलखण्ड की पारम्परिक वेशभूषा पहनकर ही नृत्य प्रदर्शित करते है ।

[20] वही

बधाई नृत्य तो है पंरतु इसमें जो धुन बजता है वह भी बधाई धुन कहलाती है । बुन्देलखण्ड में किसी भी बजाने वाले यह बोलेंगे की बधाई बजाईये तो वह वो ही धुन बजाऐगा जो कि बधाई नृत्य में बजता है । अतः नृत्य बजाई जाने वाली धुन भी बधाई नाम से ही प्रचलित है ।

बधाई नृत्य मूलतः विषम ताल में चलती है । यह मध्यलय से प्रांरभ होकर द्रुत लय पर समाप्त होती है इसी मध्य व द्रुत लय पर समाप्त होती है इस मध्य व द्रुत लय को विभिन्न उतार चढ़ावों के माध्यम से प्रस्तुत कर नृत्य में रोचकता उत्पन्न की जाती है बधाई नृत्य का परम्परागत वाद्य ढ़पला है जिसकी थाप सुनकर स्त्री व पुरूष नाच उठते है । स्टेज पर प्रदर्शन के दौरान इसकी बजौटी में और अधिक विभिन्नता लाने के लिए ढ़ोलक, टिमी, बांसुरी रमतूला आदि का भी प्रयोग किया जाने लगा है । बधाई ताल के बोल मुख्यतः इस प्रकार है –

'' धीग धा SS धीक धिनक, तीकता SS लीक तिनक ''

बधाई नृत्य में परम्परागत रूप से गायन की परम्परा नहीं थी पंरतु स्टेज पर पहुंचने से इसमें बधाई नृत्य से संबधित संस्कारों के अनुरूप पारम्परिक ताल बंद्व गीतों का प्रयोग किया जाने लगा है। अतः इसमें अब दादरा, कहरवा पर आधारित कई गीत गाए जाते हैं।

बधाई नृत्य में प्रयुक्त अधिकांश गीत जन्म– विवाह संस्कारों की रीति रिवाजों व माहौल के अनुरूप श्रृंगारिक एव हास्य परक होते है पंरतु चूंकि हमारी भारतीय संस्कृति की जड़ें अध्यात्म से जुड़ी हुई है अतः अधिकांश उपमा व उपमान हमारे आदर्श आराध्यों यथा राम व कृष्णादि पर आधारित होती है । अतः यहां का श्रृंगार रस राधा कृष्ण की लीलाओं से प्रेरित होता है ।

बालक या बालिका का जन्म होने पर उसे राम अथवा कृष्ण से तुलना करना अथवा विवाह के समय वर–वधु में भगवान राम व सीता की कल्पना करना इसमें प्रयुक्त श्रृंगार व हास्य को भी आध्यात्मिक भक्ति भाव से ओत प्रोतकर देता है ।

इसलिए लौकिक उत्सव अलौकिक उपमाओं से सुसज्जित होकर अश्लीलता की ओर न जाकर आध्यात्मिक सीमा में विचरण करता रहता है ''पीढ़ी दर पीढ़ी परम्परा'' में फलीभूत होकर बधाई नृत्य के गीतों में हर युग की छाप को स्पष्ट देखा जा सकता है – त्रेता युग राम, द्वापर के कृष्ण ये सभी बधाई लोकनृत्य के गीतों में चर्चित व वर्णित होते है ।

इस सबंध में प्रचलित एक गीत इस प्रकार है –

जनम लये रघुरैया, अवध में बाजे बधैया ।।

इस गीत से ऐसा प्रतीत होता है कि त्रेता युग में भी श्रीराम जन्म के समय बधाई नृत्य व गीत का प्रचलन अवश्य रहा होगा ।

इन अलौकिक भावों के अतिरिक्त बधाई नृत्य के गीतों में लौकिक रिश्तों पर आधारित हास्य व्यंग्य अदि संवादों का भी ताल वद्व करके गाया व नाचा जाता है जिसमें समधी समधन की हंसी–मजाक, जीजा साली की ढ़िढ़ोली की मनोरम काव्य प्रस्तुत होता है । कभी समधन द्वारा समधी के मूंछों का मजाक बनाना तो कभी समधी द्वारा समधन की सुन्दरता पर मोहित होना इस सभी भावों का काव्यात्मक रूप बधाई नृत्य के गीतों में अत्यंत ही गरिमापूर्ण तरीके से प्रस्तुत किया जाता हैं। इन गीतों के बोलों को बधाई नृत्य में विभिन्न धुनों में पिरोया गया है जिससे ताल के उतार चढ़ाव से नृत्य में उत्साह व रोचकता बनी रहें ।

बधाई नृत्य गीत में –

1. श्रृगांर एवं प्रेम
2. समजिकता
3. कृष्ण चरित्र एवं लीलाएं
4. घरेलू वातावरण के चित्र
5. फसलों का उल्लेख

Xkhr – नैना वंध लागे कहियो हो ,

चोली बंध लागे कहियों ।
गुरसी की आगी बुझत नैया ,
इन समधन की गारी मिटत नैया ।
खोली नैया डिविया , खुबाये नैया पान ,
इन समधन ने सबकी ले लई जान ।
खोल देहे डिबिया, खुबा देहे पान, इन समधन से तुमहरी बचा लेहे जान ।।

टूटी पनैया खचोरत जाए , इन समधन खो देखे विसूरत जाए ।
नैना वंध लागे.....
टूटी पनैये सिलवा देहे , इन समधन खो संगे पठा देहे ।
नैना वंध लागे.....
(संकलन–श्रीमती भारती रिछारियाग्राम ढ़ाना)

प्रस्तुत गीत बुन्देल खण्ड के सामाजिक रिश्तों की नोंक–झोंक पर आधारित है जिसमें समधी व समधन के हास परिहास भरे सवाल जबाव है । जिसमें समधी की शिकायतों का समाधान समधन बड़े ही हास्यापद शैली में करती है । समधी

शिकायत करते है कि समधन उनको लगातार दे रही है और न ही उनको पान ही खिला रही है । और जब समधी वहां से निकल रहे है तो समधन का मुंह देख–देख उनको बहुत दुख हो रहा है । इस पर समधन समधी की शिकायतों का हल बताते हुए उनके साथ जाने की बात करती है।

नैना वंध लागे कईयो हो

चोली वंध लागे कईयो

कांसे की थाली चढ़ी जंगाल, जे समधी मिले सो बेई कंगाल

नैना वंध लागे.....

पीपर को पत्ता हिलत नैया, इन समधी की बैठत उठत नैया

नैना बंध लागे.....

काली चिरैया की पूंछ नैया, इन समधी विचारे की मूंछ नैया

नैना वंध लागे.....

इस गीत में समधन के द्वारा व्यंग्य बनाने के लिए समधी की आर्थिक स्थिति, उनकी मूछों आदि का मजाक बनाया जाता हैं ।

नैना बंध लागे कईया हो

चोली बंध लागे कईयो...

टूटी टपरिया की छांके दिखांए, इन समधन के ठनगन हमे न सुहाय

नैना बंध लागे कहियो...

पीरी चुनरिया की कोर कारी, इन समधन की मुईया लगत प्यारी

नैना बंध लागे कहियो...

(संकलन –श्रीमती लक्ष्मी बाई सागर)

नैना बधं लागे कईया हो, चोली बंध लागे कईयो

इमली की चटनी और आम को पनो, तनक चीख मोरी भौजी जो कैसो बनो

नैना बंध लागे कहियो...

ऐ छानो ओ छानी कूंदे बिलैया, धीरे से बात करे भौजी को भैया

नैना बंध लागे कहियो...

टोर लयाए कौसे बना लई कड़ी , जरा चीखो तो भौजी जो कैसो बनो

नैना बंध लागे कहियो...

कल्लो ने फूटे धमाको ने होय, बड़ी भौजी निकर गई सो एरो ने होय ...

नैना बंध लागे कहियो...

इस गीत में देवर द्वारा अपनी भाभी से शाब्दिक हास्य व्यंग की झलक देखने को मिलती है जिसमें देवर अपनी भाभी के भाई का मजाक बनाता है तथा खठ्ठी चटनी खाने को बोलकर उनका मजाक बनाता है।

नैना बंध लागे कईयो हो , चोली बंध लागे कईयो

देखो जो मोड़ा कैसो जो मोडा, मुईया मरोड़े कैसो जो मोडा ,

नैना बंध लागे कहियो...

आलू रे आलू बड़े आलू , जे सागर के लरका बड़े चालू

नैना बंध लागे कहियो...

बेलना सरका दे सागर वारे , बेलना सरका दे

नैना बंध लागे कहियो...

(अन्नपूर्णा देवी सागर)

देवर के मजाक बनाए जाने पर भाभी द्वारा देवर के साथ भी मजाक किया जाता है तथा उनको चालू लड़का बोलती है तथा अन्य प्रकार से मजाक बनाती है ।

नैना बंध लागे कईया , हो चोली बंध लागे कहियो

पर गई दुफरिया झुलाओं बिजना, हमसे न बोलो तुम जाओं सजना,

नैना बंध लागे कहियो...

गये ते बजारे लियावे चूं–चूं झक मारत आ गये पीछू

नैना बध लागे कहियो.....

पिया हमखो तुम बिजना डुलाओं , दुफरिया में गर्मी लगे

(संकलन –अनुराग रिछारिया सागर)

पत्नी द्वार अपने प्रेमी पति के साथ प्रेम भरी लड़ाई को दर्शाया गया है, जिसमें पत्नी प्रेम भरी नोंक–झोंक में पति को उससे बात करने को मना करती फिर भी पति के न मानने पर पति उससे पीछे–पीछे जाते है तो पत्नी प्यार से बोलती है कि ठीक है तो पीछे आ रहे तो मेरी थोड़ी सेवा करो मुझे गर्मी लग रही है तो तुम मेरे लिए हवा करो ।

मोरी चंदा चकोर , नेहा लगा रइ कोरई कोर ।

नैना बध लागे कहिया

मेरी काय सोना, काय सोना कैसो करो जादू टोना ।

नैना बध लागे कहियो....

मोरी गोरी धना काजर बूंदा लाल

नैना बध लागे कहियो....

मोरे बाबा जू ये बाजू रे हो कि ओ बाजू

नैना बध लागे कहियो

(श्रीमति हरिबाई कटनी)

इस बधाई गीत में पति द्वारा अपनी पत्नी को विभिन्न प्रकार से रिझाने का प्रयास करता है उसके चेहरे की तुलना चंद्रमा से करता है तथा उसके द्वारा किए गए श्रृंगार की तारीफ करता है ।

नैना बंध लागे कहियो, चोली बंध लागे कहियो

मार मार लठिये चढ़ाई घटियें , बीचई में पसर गई मताई बिटियें

नैना बध लागे कहियो .....

मंदिर के नेचे धरम शाला , बिना आंखो के जोगी जपे माला

नैना बध लागे कहियो.....

(संकलन– श्रीमति किशोरी बाई पटकुई)

इस प्रकार हमने देखा कि बधाई के उपरोक्त नृत्य के गीतों में समाज के हर रिश्ते से जुड़ी सामाजिक मान्यता दिखाई देती है फिर वह चाहे समधी –समधन की व्यंग्यात्मक मजाक हो, देवर–भौजाई की छेड़छाड़ हो अथवा पति पत्नी की प्यार भरी नोंक–झोंक सभी रिश्ते व उनके पांरस्परिक संबंधों की मुधरता इन गीतों में झलकता है । इन गीतों में घरेलू वातावरण की सम्पूर्ण छटा दिखाई देती है ।

कृष्ण व राम से सवंधित बधाई गीतः–

बुन्देलखंण्ड का सामाजिक ढ़ांचा भी अध्यात्मिक व धार्मिक पृष्ठभूमि पर बना है । अतः हमारे पुराणों के नायक ही हमारे समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए प्रेरणा स्त्रोत है प्रत्येक छोटा सा छोटा व्यक्ति उनकी तरह चारित्रिक विशेषता रखना चाहता है अथवा मां–पिता जी के द्वारा यह आशा कि जाती है कि मेरे पुत्र अथवा पुत्री का चरित्र उन नायकों के समान हो ।

बुन्देलखण्ड के लोक मानस में भी संपूर्ण उत्तर भारत की तरह राम व कृष्ण ही नायक के रूप में विघमान है जो प्रत्येक जन मानस में घर किए हुए है । प्रत्येक घर के आगन में खेल रहे बालक में मां बाप कृष्ण व राम की ही कल्पना करते हैं । सामान्य बोल चाल में भी यही कहा जाता है कि बाल–गोपाल की जोड़ी में सीता–राम की छवि की कल्पना की जाती है। यही कारण हैं कि यहां कि लोक संस्कृति की विभिन्न शैलियों में राम व कृष्ण गहराई तक समाहित है ।

यही मान्यता बधाई लोकनृत्यों में भी स्पष्ट देखी जा सकती है एवं साथ ही उनमें गाये जाने वाले गीतों में राम, कृष्ण का उल्लेख यदा कदा अवश्य ही आ जाता है ।

जैसे – जनम लियो रघुरैया अवध में बाजे बधईया

कोना घरी में राम रघुरईया , कोना में किशन कन्हैया,

अवध में बाजे.....

घरी में राम रघुरईया , भादों में किशन कन्हैया,

अवध में बाजे.....

कोना घरे भए राम रघुईया , कोना के किशन कन्हैया ,

अवध में बाजे.....

दशरथ घरे भए राम रघुईया, नंद के किशन कन्हैया

अवध में बाजे.....

यह गीत बधाई नृत्य में गाया जाता है जो कि मूलतः बच्चे के जन्म के समय गाया जाने वाला बधाई गीत है । नवजात शिशु के रूप में राम व कृष्ण की कल्पना करके बड़े उत्साह से यह गीत गाया जाता है ।

झुक जईयो जरा रघुवीर लली मोरी छोटी सी

सिया मोरी छोटी, लली मोरी छोटी , तुम हो बड़े बलवीर

जयमाला लिये कबसे है ठाडी , दूखन लागो शरीर ।

लली मोरी छोटी सी.....

तुमतो हो राम जी , अयोध्या के राजा , और हम है जनक के गरीब

लली मोरी छोटी सी.....

लक्ष्मण ने भाभी की दुविधा , पहचानी , राम जी के चरणो में झुक गए वो ज्ञानी

सब कहे जय –जय रघुवीर

लली मोरी छोटी सी.....

प्रस्तुत बधाई गीत में विवाह की एक रस्म वरमाला का उल्लेख है जिसमें दूल्हा में श्री राम व दुल्हन में सीता जी की कल्पना की गई है। राम जी सीता से लंबे है इसलिए वरमाला डालने में समर्थ नही हो पा रही है। इसलिए सीता जी के संबंधी राम जी से प्रार्थना कर रहे है कि – हे राम जी आप थोड़ा झुक जाइये हमारी लली छोटी हैं । राम के तब भी न झुकने पर लक्ष्मण जी अपनी भाभी की सहायता करने के लिए राम जी के चरणों का स्पर्श करने के लिए झुकते है राम उनको चरणों में बैठा देखकर उनको उठाने के लिए झुकते है और इतनें में सीता जी राम जी को वरमाला पहना देती हैं ।

चुनरिया छोड़ो छोड़ो रसिया मोहे पनिया खो हो रई अवैर ।

पनिया खो हो रई अवैर , चुनरिया छोड़ो छोड़ो रसिया ।।

मोहे पनिया हो खो हो रई अवैर.....

कृष्ण की चर्चा आते ही कृष्ण की ललित लीलाओं का स्मरण अनायास ही हो जाता है। इस गीत में कृष्ण ने गोपी की चुनरी पकड़ ली है, जो कि पानी भरने के

लिए जा रही थी । वह कृष्ण से प्रार्थना करती है कि मुझे जाने दो पानी भरने के लिए देरी हो रही है ।

हारी रे बलिहारी रे राधा कन्हैया से हारी रे

कोउ कोउ सखियां झूठी के रई

राधा के संग बिहारी रे राधा कन्हैया से हारी रे

इस गीत का अर्थ है कि राधा कृष्ण की छेड़छाड़ से परेशान हो गई है। कुछ सखियां झूठ बोल रही है कि कृष्ण, राधा के साथ है उनको परेशान नहीं कर रहे है कृष्ण तो राधा की चुनरी खींच रहे है और राधा उनको गाली दे रही है ।

ठाठे रहियो ये मनमोहन, भर भर लयाई गागरिया ऐ वंशी वारे सावरिंया

होले चलू घर बालक रोवे , कररे चले छलके गागरिया

ऐ वंशी वारे सावरिंया.....

दिन में चले तो लोगा हसत है , रात में हंसे नानदिया

ऐ वंशी वारे सावरिंया.....

सखी संग ऑउ तो लज्जा लगत है , इकली भूलू डागरियॉ ।

ऐ वंशी वारे सावरिंया.....

(संकलन–श्रीमति सीता बाई गढ़ौला)

इस गीत में सखी कृष्ण को कहती है कि आप मेंरा पनघट पर इंतजार करना में गगरी भरके लाउंगी । फिर सखी पनघट के मार्ग में बहुत परेशानी है धीरे –धीरे चलती हूं तो घर पर बालक रो रहे है, और जल्दी चलती हूं तो गागर से पानी

छलकता है, दिन में आती हूं तो सब लोग देख देखकर हंसते है और रात में आने से ननद ताना मारती है एवं अकेली आउं तो रास्ता भूल जाती तो मुझे लज्जा आती हैं ।

लाल रंग डारो गुलाबी रंग डारो और रंग डारो केसरिया
ये वंशी वारे सांवारिया

राधा जी गोरी, दीना की छोरी, भोरी सी डायरिया, अरे तू कारे सांवरिया

इस बधाई गीत मे होरी के त्यौहार की झलक दिखाई देती है ।

इस प्रकार बधाई में राम, कृष्ण व उनकी लीलाओं से युक्त गीतों को गाया जाता है ।

श्रृंगार एवं प्रेम आधारित बधाई नृत्य गीत :–

प्रीतम नार केरई , नौकरी खो जाओ बैठे ने रईयो
साईकिल को आना जाना ,
होटल में खाना खाना ,
गिलसा से पानी पीना
कर कर कमाई हमें झुमका बनाओं .....घर बैठे न रहियो
साईकिल को आना जाना ,
होटल में खाना खाना ,
गिलसा से पानी पीना
कर कर कमाई हमे साड़ी ले आना .....घर बैठे न रहियो

(संकलन–श्रीमति लक्ष्मी बाई सागर)

इस गीत में पत्नी अपने पति से कहती है कि घर में बैठे मत रहिये कमाई करने जाईये और उस कमाई से मेरे लिए झुमका , साड़ी ,पायल आदि गहने लेकर आना । मूलतः इस गीत में स्त्री के स्वाभाविक चरित्र का चित्रण किया गया है ।

लगी जिन टोरौ ने , जियरा रहे चाहे जाय ।

प्रीत जिन टोरौ ने, जियरा रहे चाहे जाय ।।

मंदिर मेरे सुंदर निकरी ओढ़े पीताम्बर सारी रे हां हा वे हू हू वे ।

मारे शरम के नैना झुक गये , हम तो गये पानी पानी रे हा हा वे ।।

बधाई नृत्य चूंकि खुशी व उत्सव के अवसर पर किया जाने वाला नृत्य है अतः इसके गीतों में श्रृंगार व प्रेम के भाव स्वयं ही आ जाते है। मुख्य रूप से इसमे पति व पत्नी के मध्य हुये पारस्परिक संवादों का चित्रण मिलता है ।

खेंती व फसलों पर आधारित बधाई नृत्यगीत :–

आस पास चौरईयां बे दई , बीच में दोना राई को

मरे जात बड़वारी खो

अपने तो पैरे झाला कुडंल, झुमकी नैया लुगाई खो

मरे जात बड़वारी खो

अपने तो पैरे घड़ी और चूड़ा , चुड़िये नैया लुगाई खो

मरे जात बड़वारी खो

अपने तो पहिने कुर्ता जाकिट , साड़ी नईया लुगााई खो

मरे जात बड़वारी खो

इस गीत में पत्नी अपने पति के द्वारा किये जाने वाले दिखावे पर व्यंग करती है वो कहती है कि तुमने सबको दिखाने के लिए खेत में चारों ओर से चौराई बो दी पर मैं जानती हूं कि बीच में चौराई नही राई बोया है । बाहर दिखाने के लिये खुद अच्छे अच्छे कुर्ता घड़ी जाकिट पहनते हो और घर में मेरे पास एक साड़ी भी नही लाते हो ।

कम्मर कम्मर गेहूं बड़े है , सवा वेतिया वाल

आसो है टोटे की साल

हमको लै दो पायल , बिछियां, और गरे को हार

आसो है टोटे की साल

हम तो है कर्जा के मारे , तुम्हे चढ़े गर्राट

आसो है टोटे की साल

हमको लै दो चूनर साड़ी , लहंगा गोटे दार

आसो है टोटे की साल

हमको ले दो चुड़ियां कंगना , और पूरो श्रृंगार

आसो है टोटे की साल

(संकलन–श्रीमति लक्ष्मी बाई सागर)

इस गीत में किसान पति फसल अच्छी न होने के कारण पत्नी द्वारा की जाने वाली मांगों को न पूरा कर पाने की विवशता दिखाता है ।

इस प्रकार बंधाई नृत्यगीत में सामाजिक रिश्तें, श्रृंगार आसपास के वातावरण एवं ग्रामीण परिवेश में जीवन यापन करने वाले किसानों आदि सभी क्षेत्रीय जीवन शैलियों वर्णन मिलता है । इन गीतों में कुछ अर्थपूर्ण होते है तो कुछ आनंद के लिये बनाये गये बुंदेली काव्य होते है । जिनका अर्थ तो नही होता पंरतु सुनने में अच्छा लगता है ।

सैरा नृत्य तथा नृत्यगीत

वर्षा ऋतु आरंभ होते ही ,जब काली घटाये आकाश में मंडराने लगती है जब धरित्री धानी साड़ी धारण कर लेती है । वेलों व पेड़ों की जब धूल उतर जाती है सूखी तलैये भरने लगती है । नंगे पहाड़, वन , उपवन , आदि हरियाली से भरने लगते है मोर और अन्य पक्षी आनंद से नाचने लगते हैं, जब तारे बादलों की ओट में अपनी मुस्कुराहट को छिपा लेते है और बिजली द्वारा कड़ककर उनको ढूंढ़ने का प्रयास करते है तब सैरा ढ़ोलक गांवों कस्बों में बजने लगती है ।

सैरा बुन्देलखण्ड का पुरूष प्रधान लोक नृत्य है इस प्रकार के नृत्य भारत में अन्य अंचलों में भी किए जाते है जैसे – डांडिया , रास , गरवा, गैर आदि । इन नृत्यों में कुछ समानता भी है क्योंकि इन सभी नृत्यों में नर्तक हाथों में डंडा लेकर नाचते है ।

''वर्षा का आगमन होते ही सैरा गाने का समय आ जाता है सैरा का गायन केवल दो लोक वाद्ययंत्रों, द्वारा गाया जाता है । एक ढ़ोलक और दूसरा मंजीरा सैरा की ढ़ोलक जब बजती है तो उसकी शैली अपने ढ़ंग की होती है ढ़ोलक बजते ही लोग समझ जाते है कि सैरा होना है ''।[21]

[21] बुन्देलखण्डी फड़ साहित्य / डॉ.गनेशीलाल बुधौनिया /बुन्देल भारती प्रकाशन /पृ. 157

सैरा के गाने वालों को सैरवार कहा जाता है इन सैर–वारों में कभी–कभी प्रतियोगिता भी हो जाती है इसे देखने के लिए साधारण जनता की भारी भीड़ होती है बडे उत्साह से लोग रात भर सैरा देखते व सुनते है ।

रक्षाबंधन के उपरान्त कजललियों का त्यौहार होता है इसे यदि सावन का अंग कहा जाए को अधिक सटीक कहा जाएगा । भाई बहिन रक्षा का प्रण करके कजली मनाते है इस प्रेम को दर्शन के लिए भी विभिन्न लोकगीतों का सहारा लिया जाता है। सैरा नृत्य रक्षावंधन के पश्चात् भाद्रपक्ष की परमा को कजरी के दिन किया जाता है ।

''सावन माह में सैरा सबसे अधिक ख्याति प्राप्त है । इसे नटों की टोली में कहे तो अच्छा होगाा । दो टोली में यह नृत्य व गीत होता है । हाथों में डंडे लिए रहते है और गोलाकार बनाकर एक दूसरे के डंडे पर मार लगाते है । चारों ओर घूमते भी है, नाचते भी है और गाते तो है ही । बुन्देलखंडी नृत्यों में एक प्रमुख साधन माना जाता है । रिमझिम पानी फुहार में इस नृत्य को खेलने में बड़ा आनंद आता है।''[22]

मुख्यतः इस नृत्य को पुरूषों द्वारा किया जाता है । पंरतु कहीं–कहीं इसमें स्त्रियां भी भाग लेती है अतः स्त्री एवं पुरूष सम्मिलित होते है। कुल मिलाकर यह नृत्य शौर्य और श्रृंगार का समन्वय है ।

''इस नृत्य में अवसरानुसार वीर रस और श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति होती है ब्याह व शादी के अवसर पर श्रृंगार रस का समावेश होता है तथा कजजियां लौटाने के अवसर पर जब नृत्य होता है तो वीर रस का ।''[23]

सैरा नृत्य जातिगत नृत्य होता है इसे किसी भी जाति के लोग, किसी भी आयु वर्ग के लोग कर सकते है । गांव के चौपाल पर सैरा नृत्य होता है एक तरफ

---

[22] बुन्देंली लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन/डॉ. मोतीलाल चौरसिया/ क्लासिकल पब्लिकेशन कंपनी नई दिल्ली /पृ. 165

[23] मध्य प्रदेश का लोक संगीत/ शरीफ मोहम्मद/ पृ.85

कजलियां निकलती है । उनमें स्त्रियां कजलियों का पूजन करके उन्हें दूध चढ़ाते हुए परिक्रमा लगाती है तथा राछरे नामक गीत गाती है, दूसरी तरफ पुरूष वर्ग सैरा नृत्य गायन करते है ।

हाथ में लगभग एक डेढ़ फीट के गोल कलात्मक डंडे के साथ नर्तक गोल घेरे में खड़े होते है । नर्तक आपस में डंडों से ध्वनि निकालते है । इन डंडों की टकराहट की आवाज ताल का काम करती है ।

''गीतों के स्वरों के साथ नृत्य में ओजपूर्ण गति आती है । हाथों की क्रियाओं और पद संचालन के साथ वृत्त में विभिन्न आकृतियां बनाई जाती हैं। नृत्य की तीव्र गति के साथ नर्तकों के मुंह से निकली ललकार ही इस नृत्य की विशेषता होती है । ललकार में जितनी तेजी बढ़ती है , वादक गण भी वाद्यों की लय ताल भी उतनी ही तेजी से बढ़ाते है । पैरों की ठुमक और थिरकन वाद्यों की गमक और गर्जन तथा कमर की लोच–लचक देखते ही बनती है ।''[24]

नर्तकों की वेशभूषा घुटनों तक सफेद धोती ,कुर्ता , कंधे पर तौलिया सिर पर झब्बेदार साफा बांधते है । गले में ताबीज पहनते है तथा जाकिट पहनते है ।

सैरा नृत्य के वादक साजिन्दे, सौबत एक तरफ खड़ी होती है। गोले में खड़े नर्तक गायन आरंभ करते है और गायन की लय पर एक दूसरे से डंडा टकराते हैं। इस नृत्य तथा इसमें प्रयुक्त गीतों में ओजस्व व शौर्य की प्रधानता होती है ।

सैरा चूंकि कजली के दिन होता है और आल्हाखण्ड में कजलियों की लड़ाई एक प्रसंग हैं इसलिए यह कहा जा सकता है कि सैरा का संबध आल्हा उदल से रहा होगा।

[24] मध्य प्रदेश का लोक संगीत/ शरीफ मोहम्मद/ पृ.85

सैरा के विषय क्षेत्र के अंतर्गत आल्हा खंड की सभी लड़ाईयां आ जाती है, इसके अतिरिक्त जब बहुत से सैरवार गाते है तो उसके बीच–बीच में रामायण महाभारत के आख्यान भी जोड़ते चले जाते है ।

कभी–कभी कुछ सामायिक विषय जमींदारी उन्मूलन , वन महोत्सव , अनमेल विवाह , आदि जनता के मनोरंजन के लिए बीच–बीच में गाते चले जाते है '' ।[25]

गीत के साथ–साथ संगीत तथा नृत्य आरंभ हो जाता है सैरा नृत्य तीन चरणों में होता है उन्हीं के अनुरूप गायन, वादन तथा नृत्य होता है ।

iFke pj.k dgjok%&

सैरे के प्रथम चरण में कहरवा गायिकी होती है जोकि विलम्बिल लय में होती है जिसमें प्रथमतः सुमरनी का गायन किया जाता है । कहरवा में प्रायः युद्व विषयक प्रसंग होते है जिनमें आल्हा–उदल का चरित्र चित्रण एवं उनके वीरता के प्रसंग होते हैं ।

नृत्य के प्रांरभ में नर्तक गायन, डंडा एवं नर्तन करते हुए धीरे धीरे गोले मे आगे बढ़ते है नृत्य की मुद्राएँ भी बदलती जाती है, धीरे –धीरे नृत्यगीत मे तेजी आने लगती है।

सुमरनी – सदा तो भुवानी अरे दुरगा दायनी हो ,

सन्मुख रहत गनेश ।

पांच देव अरे रक्षा करें ।

कउ विरमा विसनु महेश ।।

[25] बुन्देलखंडी फड़ साहित्य / डॉ. गनेशीलाल बुधौनिया/बुंदेल भारती प्रकाशन/पृ.157

सैरा नृत्य की गायिकी कहरवे में सुमरनी गाकर प्रांरभ होता है । इस सुमरनी में नर्तक मां भवानी, गणेश, ब्रम्हा, विष्णु, महेश से स्वंय की रक्षा की प्रार्थना करता है ।

खैरे की गालौ रे खेरापति, मेड़े के मड़ैया देव ।

जरिया भूमिया येई गांव, जाकी पीरा सही ने जाए ।।

(संकलन –श्रीमान परसादी पटैल रतोना)

प्रस्तुत पंक्तियों में खेती के पूर्व वहां उपस्थित लोक देवों की वंदना की गई है ।

सैरो तो सैरो रे , अरे सब कोउ कहे हो

सैरो भलो ने होय , डांडला चूकत

अरे बहिया घल हो जाकी पीरा सही न जाय ।

इसका भावार्थ है कि सब लोग कहते है कि सैरा अच्छा नही होता , यदि डंडा चूक जाए तो बांह में लग जाता है जिसकी पीड़ा सहन नही होती ।

नांय से आ गई रे नई बेतवा हो, मॉय से फैलीधसान ।

दोई नदियों के अरे कहूं बीच में हो , झंडा रोपै मरद मलखान ।।

अर्थात यहाँ से नदी बेतवा आ गई है, और उधर नही धसान फैली है । इन दोनों नदियों के बीच में वीर मलखान ने अपने वीरतार के झंडे गाड़े हुए है ।

बैठी तो रैयो रे, अरे रानी सतखण्डा हो ,

खइयो दबो के पान ।

जब एक योद्धा अपनी रानी से बोल रहा है कि तुम सतखंड पर बैठकर आराम से खूब पाना खाना , मैं जब युद्व लड़कर लौटूगा तो तुम्हारी मांग को मोतियों से भर दूंगा ।

जर जातो वर जा रे, अरे सतखण्डा हो , पानो पे परजा तुषार ।

तोरे अकेल जियरा बिना हो, सूनो सूनो लगें संसार ।।

उस योद्धा की पत्नी जो युद्व में जाने वाला है और लौटकर आने का सपना दिखा रहा है बोल रही है – कि इस सतखण्डा को आग लग जाए जिस पर तुम मुझे बैठने को बोल रहे हो । और तुम मुझे कहते हो कि मैं घर में आराम से बैठकर पान खाउ , भगवान करे सारे पानो पर तुषार लग जाय तुम्हारे बिना मेरा मन कहीं नहीं लगता सारा संसार सूना लगता है।

मची तो गुहारी रे , अरे कीच की हो, हिरना खच खच जाए ।

समर के चलियों रे हिरना हरों हो , कउ पाओ लचक ने जाए ।।

(संकलन–श्री गोपाल पटेल सागर)

इसमें सावन मास की छटा दिखाई दे रही है जिसमें बारिस के कारण चारों तरफ कीचड़ मच गई हैं । वहां से जो हिरनें निकल रही है उनके पैर उस कीचड़ में खच–खच जा रहे थे । इसमें हिरण को कहा जा रहा है कि आराम से सम्हल–सम्हल के चलों कहीं तुम लोगों के पैर न लचक जाए ।

बारो लटक रई रे लटकावनी रे, गड़ों लटक रई धान ।

गोरी धना लटक रई अरे अपने मायको रे , कउ ही पुरूष की नार ।

(संकलन– हरनाम विश्वकर्मा सागर)

लताओं में बालें लटक गई , खेतों में धान रोपी जाने लगी है और जो पुरूष अपनी पत्नी की मांगों को पूरी नही कर पा रहे है वो सावन में अपने मां के घर चली गई है ।

गेउड़े जुनरिया हो आरे पिया जिन बओ हो, को रखबारी ले ।

हम डुर जेहे अरे अपने मायके हो , तोरे भुन्टा बरेदी खाए ।।

(संकलन–वंशीलाल रैंकवार पथरिया)

पत्नी अपने पति से बोल रही है कि खेत में जुनरिया मत उगाओं , रखवारी कौन करेगा मैं तो अपने मायके चली जाउंगी , आपके सारे भुटटा गाया चराने वाले बरेदी खा जांएगे ।

आये तो एकई रे , अरे लला गांव से हो , उतरे एकई घाट ।

क्रनी करतो ने बनी अरे लाला से हो गए बारा वाट ।।

इन पंक्तियों में जीवन का रहस्य छुपा हुआ है कि भगवान ने तो सभी को एक समान बनाया है पंरतु व्यक्ति अपने –अपने कर्मों के कारण विभिन्न सुख व दुख का भोग करते है । इसका शब्दार्थ है कि हम एक ही गांव से एक ही घाट पर आए है पंरतु अब अपनी अपनी कामों के अनुसार हम बंट जाएंगें ।

साहुन सुहाने रे अरे मुरली बजे हो , भादो सुहानी मोर ।

तिरिया सुहानी जबई लगे हो , ललआ झूले पौर के दौर ।।

सावन का सुहानापन तभी माना जाता है जब मुरली बजती हो और भादो के महीने में मयूर नही नाचे तो वह क्या काम का इसी तरह यदि स्त्री के गृह द्वार पर

बच्चा न झूलता पाया गया तो उसका अस्तित्व न के बराबर है । अर्थात इसमें स्त्री की महत्वता तभी दिखाई है जब उसने मातृत्व धारण किया हो ।

रिमझिम रिमझिम अरे मेघ गिरे हो , अंगना मच गई कीच ।

पनिया खो निकरी रे मटकी धरे हो , गौरी फंस गई कीच के बीच ।।

रिमझिम–रिमझिम बारिस हो रही है जिससे सारा आंगन कीचड़ में भर गया है तभी जब नायिका पानी भरने के लिए मटकी लेकर निकली तो कीचड़ के बीच में ही फंसकर रह गई ।

सदा तुरैया हो अरे फूले नई हो , सदा ने साहुन होय ।

सदा न राजा अरे रण पे चढ़े हो, सदा ने जीवन होय ।।

इन पंक्तियों में सम्पूर्ण जीवन दर्शन छुपा हुआ हैं । इसमें जीवन की वास्तविक सत्यता बताया गया है कि ये जीवन सदा के लिए नही होता है जैसे कि तुरैया हमेशा नहीं होती, जिस प्रकार हमेशा सावन नही रहता अर्थात जिस प्रकार मौसम बदलता रहता है, और जिस प्रकार राजा हमेशा रण में ही नहीं रहते है वैसे ही यह जीवन सदा नही होता ।

बैल तो लेले रे अेर लीला धौरिया हो , लेले टगर के खेत ।

लम्बे डारो रे पिया सायने हो , अरे ढ़ीले लगाले जोत ।।

(संकलन–हीरालाल बरेठा जेरई)

प्रस्तुत पंक्तियों में बैलों द्वारा खेत की जुताई का चित्रण किया गया है ।

लंका गरजे रे अरे रावना हो , अवधपुरी भगवान ।

इन दोनो के अरे कछु बीच में हो , गरज रहे अनुमान ।।

लंका में रावण गरज रहा है और अयोध्या पुरी में भगवान श्रीराम और इन दोनों के बीच में श्री हनुमान जी गरज रहे है ।

हरी तो करोदन अने झक झालरी हो हरे सुआ की पार

हरे तो बछेड़ा अरे रस बेंदरा हो , वन में कर रए है किलकोर

प्रस्तुत पंक्तियों में सावन में होने वाली वन की स्थिति का वर्णन किया गया हैं । जिसमें वर्षा ऋतु में वन में करोदा फलों की वृक्ष लहलहा रहे है जिस पर हरे–हरे तोता बैठे हुए हैं । बछड़ें और मेंढ़क वन में खेल कूद कर रहे है ।

उमर तो रोई रे अरे फूल खो हो , वन रोई कचनार ।

गेरी तो रोई रे अरे पूत खो हो , मोरे बांझ के नाव मिटाओं ।।

जैसे उमर फूल चाहती है, और वन कचनार चाहता है । वैसे ही एक स्त्री विवाह के वाद पुत्र की इच्छा रखती है उसके सिर से बांझ होने का कंलक मिट जाए ।

उमर तरे को हो अरे डोयला हो, मिदर डिबकिये लेए ।

उठ उठ देखे अरे मेंदर हो , कउ काय की खलबल होय ।

(संकलन–ओम प्रकाश चौबे सागर)

प्रस्तुत पंक्तियों में सावन में होने वाली बारिश के कारण कुंए में गिरती बूंदों को देखकर मेंढ़क के आंनदित होने का चित्र प्रस्तुत किया गया है ।

टोरी लबुदिये रे अरे नोरे आर की हो, मारी सड़ासड़ चार ।

अब ने जेह रे मायके हो, तोरे भुन्टा रखाबे जाए ।।

प्रस्तुत पंक्तियों में ग्रामीण परिवार में महिला की स्थिति का चित्रण मिलता है जिसमें वह मायके जाना चाहती है । पर उसका पति उसको लाठी से पीट देता है डर के मारे वह मायके नही जाने की बात बोलती है और साथ ही यह भी आश्वासन दिलाती है कि आपकी खेती में भी आपका सहयोग करूगी ।

सरग तरैये रे कौनें गिनीं, कौनें मूंड़ के बार ।

बंसा की पतियें रे , कौने गिनीं, हिलोरो ताल ।

इसमें प्रश्न किया गया है कि आसमान के तारों को किसने गिना है और किसने सिर के बाल गिने है । किसने बांस की पत्तियां गिनी है और किसने समुद्र को हिलाया है ।

सरग तेरैये रे चंदा गिनीं, कखई मूंड़ के बार ,

बंसा की पतिये रे भौंरा गिनी, राजा राम हिलोर दय ताल ।

(संकलन–शिव रतन यादव सागर)

इन दो पक्तियों में ऊपर के प्रश्नों का उत्तर दिया गया है कि आसमान के तारों को चंद्रमा ने गिना है, सिर के बालों को कंघी ने गिना है । बाँस की पत्तियों को भौरों ने गिना है और राजा राम ने समुद्र को हिलाया है ।

टौरन टौरन रे सागर बसे खुरई अले मैदान ।

गांव गढ़ौला रे कर कौं बसो जेर वारो तला के पास ।

इन दो पंक्तियों में बुन्देलखण्ड के कुछ शहरों व गांवों की स्थिति को दिखाया गया है ।

इस प्रकार सैरा नृत्य गीत के इस प्रथम चरण में कहरवा गायकी में सावन माह की बारिश के कारण प्रकृति का चित्रण आल्हा, उदल की वीर गाथाँए, फसलों की स्थिति, ग्रामीण पारिवारिक परिवेश, पशु पंक्षियों की स्थिति तथा महिलाओं का सावन में मायके जाने की आस, मातृत्व की आशा, प्रिय से प्रेम आदि लगभग समस्त सामाजिक स्थितियों एवं परिवेशों का चित्रण होता है जोकि अत्यंत ही मनोहारी आनंद दायक होता है ।

ikb% नृत्य का दूसरा चरण अर्थात मध्यलय में गायन, वादन तथा नृत्य होता है मध्य लय में पाई गायन शुरू होता है इस समय नृत्य तथा संगीत का कलात्मक पक्ष कहा जा सकता है वह दर्शकों को देखने मिलता है । सैरा नृत्य की मनमोहक मुद्रायें इस समय बदलती जाती है नर्तक भी बड़ी मस्ती के साथ यह नृत्य व गायन करते है। नृत्य बैठकर लेटकर, आड़े, तिरछे होकर झुककर किया जाता है नर्तक एक हाथ में गमछा, दूसरे में डंडा लेकर नृत्य की विभिन्न मुद्रायें करता है ।

पाई गायन शैली में, राधा–कृष्ण विषयक लोक जीवन प्रसंग होते है ।

जाव राधे चली जाव राधे,

मनमोहन खो ढूंढ़ ल्याव जाव राधे.....

सिर पै धर ले फूलों की डलिया ,

अरे मोरे राधे फूलों की डलिया ,

सो मालन वन चली चली जाव राधे ,

मन मोहन खों ढूंढ़ ल्याव जाव राधे .....

(संकलन–श्री राजू यादव)

इस गीत में कृष्ण कही खो गये है तो गोपी राधा से कहती है कि तुम मालिन बन जाओं और सिर पर फूलों की टोकरी रख लो और गांव–गांव घूमकर कृष्ण को ढूंढ़कर लाओं ।

मेघा में भीजे चुनरिया , गोरी तोरी

मेघा में भींजे चुनरिया .....

फरवन – फरवन आ गई नरवदा जू आ गईं नरवदा

उमड़–उमड़ बरसे बदरिया, गोरी तोरी

मेघा में भीजे चुनरिया .....

(संकलन–ओम प्रकाश चौबे सागर)

इस गीत में सावन में होने वाली बारिश में प्रेमी व प्रियतमा के संवादों का श्रृंगारिक चित्रण है । जिसमें बारिश में प्रेमिका की चुनरी भीगता हुआ देख प्रेमी को आंनद आता है ।

जो तन भओ दूबरो कब से

मित्र बिछुर गए जब से ।

ना काहू ने लिख दिये है,

करें निहोरा सब में ।

सारी रात अरज चंदा से ,

सब दिन सूरज खां से ।

रसिया कह दोउ नैन हमारे ,

लगें सांवरी छव से ।

जब से कृष्ण से मेरे नैना लगे है और वो मुझे छोड़कर चले गये है तब से दिन पर दिन मेरा शरीर दुबला होता जा रहा है रात भर चंद्रमा से और दिन भर सूरज

से यही प्रार्थना करती रहती हूँ कि कृष्ण से बोलना कि मेरे नैन सिर्फ उनके साँवरे छवि का राह तक रहे है ।

मरी जाऊ वारी छैल तोरे बोलो में
फरवन फरवन आ गई नर्मदा
पिडरी भींजे हिलोरो में
मरी जाऊ ....
पिडरन पिडरन आ गई नर्मदा
जगिये भींजे हिलोरे मे
मरी जाऊ ....
जगियन जगियन आ गई नर्मदा
अम्बर भींजे हिलोरो में
मरी जाऊ ....
छतियन –छतियन आ गई नरमदा
हरवा भींजे हिलोरो में
मरी जाऊ ....
(संकलन–श्रीमान गोपाल पटेल सागर)

प्रस्तुत गीत में सावन मास में नर्मदा जी के बड़े हुए जल स्तर का श्रृंगारिक वर्णन किया गया है ।

बिना मारी कुबाला पे काये रोई
के तोरी सास ननद , दुख दीन्हा , के देवरा ने दई गारी
बिना मारी.....
के तोरी जेठ जेठानी दुख दीना , के नदेउ ने दई गारी

बिना मारी.....

(संकलन–श्रीमान गोपाल सागर)

इस गीत में पति अपनी पत्नी से पूंछ रहा है कि मैने तो तुमको नहीं मारा फिर तुम यहाँ कुआँ पे खड़ी–खड़ी क्यो रो रही हो, क्या तुमको सास या ननद ने या जेठ जेठानी ने दुख दिया है या देवर और नंदेउ ने गाली दी है ।

iMxj%& सैरा नृत्य का तीसरा एवं अंतिम चरण पडगर कहलाता है पडगर गायन एवं पडगर नर्तन भी संगीत द्रुत लय पर नृत्य एवं गायन भी द्रुत लय पर पहुंच जाता है । कुशल नर्तक ही यह नृत्य कर सकते है । नृत्य की मुद्रायें भी तांडवी मुद्रायें दृष्टिगोचर होती है । इस समय दर्शक नृत्य, गायन , वादन की होड़ को ही देखता है इसमें किसका पलड़ा भारी रहा यह तय नही कर पाता है क्योंकि दर्शकों पर सैरे का जादू सा हो जाता है ।

भाई रे भये भुनसारे चले विचारे राम जना

बोली चिरैये , खोली किवरिये राम जना

बोली गलगल , मचगई खलवल राम जना

बोली वटेरी , रे गई अकेली राम जना

बोले डोंका, मिल गए मौका राम जना

बोले तीतर , घुस गए भीतर राम जना

(संकलन–श्रीमान गोपाल सागर)

प्रस्तुत गीत में सुबह के समय पक्षियों के स्वरों को लेकर ग्रामीण जीवन में होने वाली चहल को प्रदर्शित किया गया है ।

रतनारे नैन करो री कारे रतनारे .....

सोई कौना पै पैरों हीरी पीरी चुरियॉ,

सो कौना पै नैन करो री कारे रतनारे.....

सोई सैंयॉ पे पैरो हीरी पीरी चुरियॉ,

सो देवरा पै नैन करो री कारे रतनारे.....

रतनारे नै करो री कारे रतनारे .....

इसमें स्त्री से कहा गया है कि तुम अपने सुंदर नैनों में काजल लगा लो । पुनः स्त्री से प्रश्न किया जाता है कि तुम ये पीली चुनरिया किसके लिये ओढ़ रही हो और काजल किसके लिये लगा रही हो स्त्री उत्तर देती है कि मै अपने पति के लिये पीली चुनरिया ओढ़ रही हूँ और देवर के लिए काजल लगा रही हूँ ।

मथुरा में कनैया ज जनम लिये, मथुरा में .....

सोई लै बसदेव चले रे गोकल खो,

सो झपट कै जमना मैया चरन गहे मथुरा में .....

सोई लै बसदेव पौर भये ठॉड़े,

सो झपट जसोदा मैया बदल लये मथुरा में .....

इस गीत में कृष्ण जन्म के समय की झांकी को प्रस्तुत किया गया है । कृष्ण के जन्म लेते ही वसुदेव उनको गोकुल की ओर ले जाते है जमुना पार करते समय जमुना नदी उफनकर कृष्ण के चरणों को छू लेती है इन सब मुसीबतों के बाद भी

वसुदेव जी जल्दी–जल्दी यशोदा के घर पहुंच जाते है और यशोदा के बच्चे से कृष्ण को बदल देते है ।

असढ़ा तो लागे रे मोरे प्यारे,

डूब गई हरियाय

बीरन लुबउआ न आए

मैंने चुनरी धरी रॅगाय

मोरो चित्त न लगे रे बालमा ।

(संकलन–शिव रतन यादव)

कोई नववधु पत्नी पति से कहती हैं– हे प्रिय अब तो आषाढ़ लग गया है मैने चुनरी रंगाकर रखी किंतु मेरे भाई मुझे बुलाने नही आए । अब तो मेरा मन यहाँ लगता ही नहीं हैं । बुंदेलखण्ड में सावन मास में सभी व्याही लड़किया नैहर जाती है । प्रस्तुत गीत में वधु का नैहर स्नेह ही अभिव्यक्त हुआ है ।

तोरे गुन जान गई अरे बालमा रे

जब तो कहत ते रंग महल में हो रंग महल में

टूटी टूपरिया में ले आए बालमा रे .....तोरे गुन

तब तो कहत ते सेज सुपती हो .....सेज सुपेती

टूटी खटुलिया दिखानी रे बालमा रे .....

स्त्री का कथन है अरे प्रिय तुमने मुझे अच्छा बहकाया, पहले कहा कि मुझे रंगमहल में ले चलोगे जहां श्वेत सेज होगी, किन्तु यहाँ अपने पर तो मुझे टूटी टपरी और टूटी ही चारपाई दिखाई दे रही है । गीत में व्यंग स्पष्ट है। इस तरह प्रायः समस्त सैरा

गीत प्रेम प्रसंगों पर ही आधारित रहते है । विरह की अपेक्षा मिलन प्रसंग इन गीतों में अधिक है ।

अध्याय– 3

ukjrk]f<ej;kb] dkuMk uR; d yksduR;kRed xhr

ukjrk uR; rFkk uR; xhr

नौरता अर्थात नवरात्री। नवरात्री के नई दिनों में बुंदेलखंड अंचल में कुँवारी कन्याओं द्वारा किया जाने वाला देवी जी का अनुष्ठान है। नौरता का आयोजन क्वार की नवरात्री में किया जाता है। नौरता कुँवारी लड़कियों का एक विशेष खेल है, जो क्वार मास में नवरात्री के समय मनाया जाता है। किंवदंती है कि–

प्राचीन समय में सुआटा नामक दैत्य कन्याओं का अपहरण किया करता था। उससे रक्षा हेतु कन्याओं ने दुर्गा की आराधना की। दुर्गा ने प्रसन्न होकर उस दैत्य का वध किया और तभी से बालिकाओं का यह आराधना खेल के रूप में प्रथा बन कर चली आ रही है। क्वार की नवदुर्गा आरंभ होने के प्रथम दिन से अन्तिम नव दिन तक यह खेल खेला जाता है।

एक अन्य मान्यता के अनुसार –

सीता जी ने रामचंद्र जी को पुष्प वाटिका में देखा और मन ही मन में उन्हें पति रूप में पाने की इच्छा से उन्होंने नौ दिन तक देवी का व्रत रखा तथा उनकी उपासना की थी जिसके फलस्वरूप उन्हें श्री राम पति रूप में मिले । तभी से मनवांछित वर पाने की कामना से नौरता की परंपरा चली आ रही हैं।

आश्विन नवरात्र प्रारंभ होने से कई दिन पहले लड़कियां नौरता की तैयारी प्रारंभ कर देती हैं। किसी एक घर अथवा बड़ी दालान में नौरता बनाया जाता है।

शिव सहाय चतुर्वेदी के अनुसार–

मिटटी का चबूतरा बनाया जाता हैं जिसमें नीचे हाथ–पाँव जोड़कर दैत्य का रूप दिया जाता है। फिर दीवाल के सहारे चबूतरे के पीछे पत्थर मिटटी से पर्वत का आकर बनती हैं उसके दोनों ओर सूर्य चंद्र बनाये जाते हैं। पर्वत के नीचे दो पकी पूरियां गाड़कर दुग्ध कुण्ड बनाये जाते है। पर्वत शिखर को रंग–बिरंगे कंकड़ पत्थरों तथा कई रंग की मिटटी से सुसज्जित करती हैं। कुम्हड़ा तुरैया के फूल उस पर चढ़ा देती हैं। नदी की रेत में मिलने बाली सफेद सीप तथा शंखिया बीन कर उन्हें महीन पीसकर कटोरी में रख लेती हैं जिससे उत्तम चमकदार चूर्ण तैयार हो जाता है। ईंट तथा लाल खपरा पीस कर लाल रंग का चूर्ण तैयार कर लिया जाता है। इन दोनों चूर्णों से नित्य नौरता के आसपास तथा उसके सामने वाली गली में बड़ी चतुराई और सुंदरता के साथ चौक पूरे जाते हैं।

सुबह सुबह ही कन्याएँ पुष्प तोड़कर छिटन्ना में सजाना आरम्भ कर देती हैं जो बांस की बनी एक गोलाकार थाली नुमा होती हैं। नवरात्र की प्रतिपदा को लड़कियां जलाशय में स्नान करने जाती हैं। जाते समय नौरता विषयक गीत गाती रहती हैं। स्नान के पश्चात् लौटते समय गोरा महादेव की मूर्ति लाई जाती हैं जिसे पहाड़ पर स्थापित करती हैं। पूजन के समय दुग्ध कुण्ड से दूध दूब से छिड़का जाता हैं फिर काय डाली जाती है । इस समय से नौरता के गीतों का क्रम शुरू हो जाता है जो निम्न प्रकार है।

आओ आओ अंगना

खो खो खेले संगना

सारे गाड़े फूल चढ़ाये ,महुआ के पेड़

महुआ सियाराम, आओ पानी पियाराम।

बेल की पत्ती, जनम जनम गौर ।

आये आये पत्ती।

पांच भैया पाड़े ,छटाई बैन गौर।

(श्रीमती रेणुका अग्रवाल –सागर म.प्र.)

मोरी गौर मांगे धतूरे के बन्ना

सो कहाँ पाहें रे लाल

मोरे भैया भतीजे

हाट गए हैं

पाट गए हैं

करी ले कुंजन

चौक बसंतो

ले मोरी गौरा, लेओ महादेव

जो तुम मांगो सोई चढैहो।

(डॉ.श्रीमती विनोद तिवारी)

नौरता में सब कन्याएँ गौरी का रूप मानी जाती हैं। यहाँ एक छोटी कन्या अपने भाई से धतूरे के दूल्हा लाने की जिद करती हैं। अपनी बहन की बाल सुलभ हट को पूरा करने के लिए भाई सरे बाजारों से ढूंढ कर अपनी बहन के लिए शिव जी को ला के देते है और अपनी बहन से कहते हैं कि ये शिव जी, तुम जो चाहती हो वही इनपर चढ़ता है।

हिमांचल जू की कुवरि लडायति ,नारे सुहटा ।

सो गौरा बाई नेरा नैयो बेटी नो दिना, नारे सुहाट।

खेल लो बेटी खेल लो माई बाबुल के राज

जब ढुरि जेहो बेटी सासरे ,सास न खेलन दे।

रात में पिसाबे पीसनो, दिन ले गुबर की हेल।

सूरज की मैया जो कहै ,नारे सुहटा, मोरे सूरज कहाँ खो जाये।

(श्रीमती रेणुका अग्रवाल – सागर म.प्र.)

नौरता की शुरुआत हाथ में दूध से डूबी हुई दूब को पूजा स्थल पर छिड़कते हुए एक दुसरे के हाथ में देती हैं और एक दूसरे के पिता के नाम का सम्बोधन करती हैं । इस गीत में युवतियाँ कहती हैं कि अपने पिता के घर जितना खेलना हैं खेल लो, ससुराल में सास खेलने नहीं देगी। रात में आटा पिसवायेगी और सुबह गोबर उठवायेगी। इस परम्परा को काय डालना कहा जाता है।

हिमांचल जी की कुँवर लडायति , नारे सुहटा

गौरा बाई नैहर तोरो नैया ।

तो जइयो बेटी नो दिना नारे सुहटा ।

दसरे को परम परे

परम पड़े मेड़े, लड़े ,नारे सुहटा।

माई लड़ गए बरिया मोर

बरिया मोर लड़ा लड़े, नारे सुहटा।

समन्दर हिलोरे लेय।

तो समन्दर की माता कहे ,नारे सुहटा।

माई उन बिन भोर ने होय।

(शरीफ मोहम्मद खैरागढ़)

प्रस्तुत गीत में माँ अपनी पुत्री से नौ दिन मायके में रुकने को बोलती है और लड़की अपनी न रुक पाने की विवशता प्रकट करती हैं।

कौन बेटी ने रातो अन्हाव, तो रातो अन्हाइयो बेटी नो दिना ,नारे सुहटा ।

सीता ने रातो अन्हावतो रातो अन्हवाइयो बेटी नो दिना।

दस दिन करो श्रृंगार,दसये दसेरो होय भैया,

जितिओ नारे सुहटा।

(डॉ.श्रीमती विनोद तिवारी)

यह गीत हर लड़की एक दूसरे का नाम लेती हुई गाती है।

हमाई गौर की आईं देखो ,झाई देखो, का पेरे देखो।

कण तरुकला देखो कानो में बाला देखो।

नक् नाथुरिया देखो, पाव पैजनिया देखो।

लहँगा पेहने देखो चुनर ओढ़े देखो।

(श्रीमती रेणुका अग्रवाल – सागर)

यह गीत बालिकाएँ मिट्टी के पहले से तैयार गौरों को, नौरता पर चढ़ाते हुए गाती है, तथा नौरता के समीप खोदे गए गड्ढे में भरे पानी में अपना मुँह देखती हैं।

गोरी री गौर खोल अपनी किवरिया ।

बहार ठाडी तोरी पूजनहारी।

गौरी पूजंत्री बेत आई सुभद्रा ।

गौरी पूजन्तरि का फल मांगे

माता पिया को राज जो मांगे।

भैयन की जोड़ी मांगे।

भाभी गोद भतीजा माँगे।

(डॉ.शरीफ मोहम्मद)

नौरता पर गौर चढ़ाते हुए बलिकायें यह गाती है जिसमें वे गौर माँ से अपने माता, भाभी– भाई सबकी समृद्धि की कामना करती हैं।

झिलमिल हो

झिलमिल तोरी आरती , महादेव तोरी पारबती।

को बाओ नोनी ,चंदा बाओ नॅनो, सूरज बाओ नोनी।नोने सलौने भौजी,

कंत तुम्हारे भौजी बिरना हमारे।

झिलमिल हो।

(डॉ. शरीफ मोहम्मद)

फूलों से भरे टोकरे में फूल लेकर उनके नामों का सम्बोधन करके ये गीत गाती हैं और फूलों को भगवान को अर्पित करती हैं।

तिल के फूल तिली के दाने , चंदा उगे बड़े भुन्सारे।

उगन न हो बारे चंदा।हम घर होय लीपना पुतना।

सास न होये देबे गरिया, ननद न होये कोसे बिरना ।

माई को सहो न करिहौ।बाबुल को कहो न करिहौ।

पानी की खेप न घरिहो, गोबर की है न घरिहो।

चकिया को डंडा न पकरिहो, तबा पे कुचौया ने घरिहो।

बासी को कोर ना देहो, ताती को लैप लैप खेहों।

(श्रीमती रेणुका अग्रवाल सागर)

इसमें बालिका की बाल हट हैं जो चंद्र में देर से निकलने बोलती है नहीं तो कोई काम न करने की धमकी देती है।

खेल लो बेटी खेल लो वही बाबुल के राज।

जब दूर जेहो बेटी सासरे ,सास ने खेलन देय।

रात पिसाबे पीसनो, दिवस गुबर की हेल।

दूर देसा दई हे गोरा बेटी,दई हैं सबई बेटी।

को बेटी ताहि लिबावें जेहे, बुलाबन जेहे।

(श्रीमती विनोद तिवारी)

इस गीत में माँ अपनी बेटी से कहती है कि पिता और भाई के राज में खूब् खेल लो ससुराल में सास खेलने नहीं देगी। तुम्हारा विवाह इतनी दूर हुआ है कि कौन तुमको लेने आयेगा और कौन बुलाने जायेगा।

मोरी पीठ के भैया सुरज मल, भैया चंदामल।

जे दोउ भैया, चार भतीजे, लिबावन जेहे हैं, बुलाबन जेहे।

सर गोल पाग सम्हारत जेहे,पियरे पट फेहरावत जेहे।

लीली सी घोड़ी कुदावत जेहे,लाल छड़ी चमकावत .जेहे।

वन की चिरैया चुगावत जेहे,अंध कुबल उधरावत जेहे ।

फूटे ताल बन्धवावत जेहे,उखड़े बाग लगबात जेहे।

नंगी डुकरिया उड़ावत जेहे,भूखी डुकरिया जियाउत जेहे।

कुँवारी सी कन्या बिवाहत जेहे,ब्याही सी बिटिया चलाउत् जेहे।

(श्रीमती रेणुका अग्रवाल सागर)

ऊपर के गीत का उत्तर देते हुए बेटी अपनी माँ को कहती हैं कि मेरे भाई और चार भतीजे मुझे लेने आयेंगे। इस सम्पूर्ण भाव में बहकर अपनी कल्पना शक्ति के अनुसार अपने भाइयों के यश को बढ़ाने की बात करती हुई अपने भावुक मन को समझाती हैं कि ससुराल में जरुरत पढ़ने पर मेरे भाई आने में सक्षम हैं।

ऊँची डगर की पीपरी नारे सुहटा ,जिन तरें लगे हैं बाजार ।

बिरजी गौरा बेटी बाप से नारे सुहटा,राजा बाबुल चुनरी रंगाओ।

ढिग ढिग लिखियो मोरो मायको नारे सुहटा,अंचरन माई के बोल।

माई बैठी मझधरा नारे सुहटा,बाबुल पौर दुआर।

(डॉ. जुगल किशोर नामदेव सागर)

इस गीत में बेटी अपने पिता से चुनरी रंगवाने की जिद करती हैं और कहती हैं कि इसके कोने–कोने पर मायके की बातें लिखा दो। वास्तव में वह अपने माता पिता भाई के स्नेह से इतनी भावुक् हो जाती हैं कि सम्पूर्ण चुनरी उनकी याद से भर लेना चाहती हैं ताकि ससुराल में उसे देख कर सब याद कर सके।

चंदा सूरज दोउ भैया ठाड़े ,पकड़ें लौंग की डार।

लिली जो बांधो भैया लौंग से नारे सुहटा।

धरियल ले लो विश्राम , नारे सुहटा

हम कैसे बिलमाये हो नारे सुहटा।

जिनकी बहिन परदेस।

धामो बिलमाबे मोरे बाबुल नारे सुहटा।

जिन बेटी दई परदेस नारे सुहटा।

(श्रीमती विनोद तिवारी)

लड़की के भाई लड़की को ससुराल में लेने आते है तो बहन उनसे विश्राम करने का आग्रह करती हैं। इस पर भाई उत्तर देते हैं कि हम कैसे विश्राम करें तुम परदेस में हो तो मुझे आराम कहाँ । इस प्रकार के भावुक उत्तर से कौन बहन भावुक नहीं हो जायेगी।

पूछत पूछत आये हैं नारे सुहटा,कौन बाबुल जी की पौर।

पोरन बैठो पोरीया नारे सुहटा,खिरकन बैठो छड़ीदार।

तुम जिन जानो बाबुल मांगने नारे सुहटा,हमरो दियो गिर जाये ।

दाता के घर बढ़ियो नारे सुहटा,माई सूम के घर चोर।

पूछत पूछत आये हैं नारे सुहटा,कौन हिमांचल की पौर।

निक्रो दुलैया रानी बाहरे नारे सुहटा, बिटियन अच्छत देव।

हम कैसे निकरे भैया बाहरे नारे सुहटा, ओलिओं झडूले पूत।

तुम जिन जाने भौजी माँगने नारे सुहटा,घर घर डेट असीस।

पूत जो पारो भौजी पालने नारे सुहटा,,बिटियन अच्छत देव।

लै अच्छत भौजी निंग चली नारे सुहटा, चलते रिपटो पाँव।

चलने रिपटो भौजी गिर परी नारे सुहटा , अच्छत रये बगराये।

जितने अच्छत भौजी भों परे नारे सुहटा,तितने दुलैया लोरें पूत।

पूतन पूतन भौजी घर भरै नारे सुहटा, बहुअन भरे चितसार।

(श्रीमती रचना तिवारी)

निम्न गीत बालिकाओं द्वारा तब गाया जाता है जब वे सर पे झिंझिया रख कर घर जाती हैं।

को को चाकरी को जाये, रसबारी के सुअना।

सूरजमल चाकरी खों जाएं, रसबारी के सुअना।

का का चाकरी से ल्याय हो, रसबारी के सुअना।

माय खों हरवा, बहन खों कठुला,

गोरी धना कछु ने ल्याय हो, रसबारी के सुअना।

माय तो हँसे, बहन तो फूले,

गोरीधना टुसमुस रोइ , हो रसबारी के सुअना।

माय को छीनो,बहन को छीनो,

गोरीधना दियो पेहराये रे,रसबारी के सुअना।

(डॉ शरीफ मोहम्मद)

इतने रे आखत हमें दये ,नारे सुआटा,इतने ही दुलैया तिहारे पूत।

दूधन पूतन भरो नारे सुहटा, बहुअर आबे छै सात।

बेटा से बेटी भली नारे सुहटा, जो कुलवंती होय।

नाम लिवाय माई बाप को ,नारे सुआटा,पर घर मोड़न जाय।

(डॉ शरीफ मोहम्मद)

जब बालिकाएँ झिंझिया लेकर घर घर जाती है तो ये गीत गाते हुए परिवार को आशीष देती हैं।

अपनी गौर को पेट पिरानो सारे लडुआ हप्प।

अपनी गौर को लड़का भओ ,सारे लडुआ हप्प।

पराई गौर को पेट पिरानो ,सारे लडुआ हप्प।

पराई गौर के बिटिया भई, सारे लडुआ हप्प।

(डॉ शरीफ मोहम्मद)

जब घर–घर घूमते हुए पर्याप्त धन और अनाज एकत्रित हो जाता है तब सब बालिकाएँ मिलकर दसवीं अर्थात दशहरा के दिन भोज का आयोजन करती हैं । मिठाईयां भी परोसी जाती हैं और भोज करते हुए बालिकाएँ यही गीत गाती हैं।

इस प्रकार नौ दिन तक चलने बाला नौरता पर्व विराम पाता हैं। बालिका के विवाह के उपरांत उसे मायके में आकर नौरता उजाना की रस्म करनी पड़ती है क्योंकि इसके बाद वह नौरता में भाग नहीं ले सकती।

इस प्रकार नौरता गीत में मुख्यरूप से स्त्री का अत्यंत ही भावुक रूप के दर्शन होते हैं। जिसमें विवाह के बाद भी अपने माता पिता के लिये तड़पती हैं, तो कहीं उसके ठिठोली के संवाद, जो बाल सुलभ हठ और उस हठ में भी अपने माता पिता के लिए भावुक स्नेह के दर्शन होते हैं साथ ही भारतीय ग्रामीण संस्कृति के अमिट चिह्न भी दिखाई देते हैं जो अत्यंत ही कारुणिक तथा मार्मिक होते हैं।

ढ़िमरयाई नृत्य

यह जातिगत नृत्य है. ढ़ीमर जाती के लोग इसे करते हैं इसलिए इसका नाम ढ़िमरयाई नामकरण हुआ ।

बुंदेलखंड में निवासरत ढीमर जाती का काम पानी से सम्बंधित रहा है, जैसे घरों में पानी भरना या जलाशय से मछली पकड़ना। इसलिए व्यवसाय का आधार जल ही है, चाहे वह पीने के लिए हो अथवा जल–मछली के पकड़ने को । ढ़िमरयाई नृत्य में जो गीत प्रयुक्त होते है उनमें जल और मछली का चित्रण जरुर होता है–

" ढ़ीमर कीने मेंक दवो जार, बीद गई जल मछरी "

श्री बसंत निर्गुणे के अनुसार इस नृत्य का प्रादुर्भाव – ढ़ीमर जब शाम को थके हारे लौटते थे, तब अपनी थकान दूर करने के लिए गुनगुनाते थे, नाचते थे। इसी शौक में नृत्य जन्मा होगा अथवा इस नृत्य का जन्म नदी के किनारे हुआ होगा । मछली पकड़ने के लिए जाल बनाया, जाल को नदी में डालना तथा उसमे मछली फंस जाना । इसी क्रम में नृत्य की संरचना हुई होगी। इनके मुख्य वाद्य सारंगी क उद्‌भव भी इसी तरह हुआ होगा ।

बाद में ढ़िमरयाई नृत्य में गीत, कथा, संगीत, पदचालन, मुद्राएँ, वेशभूषा, अनुष्ठान आदि जुड़ते चले गए और ढ़िमरयाई एक सम्पूर्ण लोकनृत्य की संज्ञा पा गया।

इस नृत्य में सारंगी या रैकड़ी वादक की प्रमुख भूमिका होती है या उसकी भागीदारी को देखकर यह कहा जा सकता है कि यह नृत्य व्यक्तिगत नृत्य है, क्योंकि एक व्यक्ति जो कि सारंगी का वादन करता है, नर्तन भी वही करता है तथा प्रमुख गायक भी वही होता है। इसलिए इस नृत्य को व्यक्तिगत कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी। नृत्य में प्रमुख नर्तन एक व्यक्ति ही होता है, अन्य तो उसके सहायक होते है। ऐसा व्यक्ति जो बहुमुखी प्रतिभाओं का धनी हो वही इस नृत्य को कर सकता है।

इसके अलावा खंजड़ी वादक, लोटा वादक, तारे या झीका, मृदंग तथा सहगायक नृत्य में होते है।

रैकड़ी तंतु वाद्य है, इसे वायलिन की तरह बजाया जाता है उसी के स्वर पर गायन चलता हैं। वादक जो कि प्रमुख नर्तक होता है वह धोती, कुरता, जैकेट, साफा पहने होता है, पैरों में घुंघरू बंधे रहते हैं। ढ़िमरयाई नृत्य चक्करदार नृत्य है, इसके अलावा भी कई तरह की नृत्य मुद्राएँ होती हैं। यह नृत्य भी तीज– त्यौहार, शादी–विवाह एवं जन्मोत्सव के समय किया जाता है। नृत्य का प्रारंभ सुमरनी से होता हैं। यह नृत्य भी पूरी–पूरी रात चलता हैं। नृत्य में प्रयुक्त ताल दादरा, कहरवा एवं उनके प्रकार ही होते हैं।

f<ej;kbZ yksd uR; esa ç;qä uR;xhr

ढिमरयाई नृत्य में संस्कार गीत, धार्मिक गीत, नृत्यात्मक विरह गीत, तीज त्यौहार के गीत प्रयुक्त होते हैं। यह केवल नर्तक की क्षमता पर निर्भर है कि वह क्या क्या गा सकता है, अर्थात नृत्य की केंद्रीय भूमिका में रेंकड़िया यह निश्चित करता है कि वह किस विषय के गीत को चुनता है अथवा उसे किस विषय में रूचि है। ढिमरयाई गीत किसी भी विषय पर आधारित हो सकते हैं परंतु अपनी जातिगत व्यवसाय के अनुरूप मछली व्यवसाय की झांकी का अधिक प्रसंग आता है। इसके अतिरिक्त श्रृंगारिक गीत, खेती पर आधारित गीत, धार्मिक गीत, ज्ञान युक्त गीत, ग्रामीण परिवेश से सम्बंधित गीत, वर्तमान स्थिति से सम्बंधित गीत, आदि का भी ढिमरयाई लोकनृत्य में प्रसंग आता हैं।

भारतीय एवं बुंदेलखंड की परंपरा के अनुरूप ढिमरयाई नृत्य में गीतों की श्रृंखला ईश्वरीय पदों से होता है जिसको सुमरनी कहा जाता है।

l|ejuh–

सदा भुवानी दायनी।
सन्मुख रहत गणेश ।।
पांच देव रक्षा करे।
सो वरमा विष्णु महेश।।

बुंदेलखंड की महिमा पर आधारित गीत–

भारत भूमि बीच में बसों है मध्यप्रदेश।
और मध्यप्रदेश के बीच में सागर बसो बुन्देल।।
बड़ो प्यारो बनो संभाग सागर नोनो बनो।
नोनो बनो बड़ो नोनो।।
ये संभाग में पांच जिला हैं।
पांचों जिला महान..... सागर नोनो बनो
सागर जिले छतरपुर पन्ना।
टीकमगढ़ और दमोह.....सागर नोनो बनो
टीकमगढ़ में शीश महल है।
ओरछा को मंदिर महान.....सागर नोनो बनो
आकाशवाणी छतरपुर टेशन
पन्ना में हीरा खदान .....सागर नोनो बनो
खजुराहो के मंदिर प्यारे
पन्ना के जुगलकिशोर.....सागर नोनो बनो
जिला दमोह सिमट फैक्ट्री है
बांदकपुर के भोला नाथ..... सागर नोनो बनो
सागर शहर की ऊँची पहाड़ी
जहाँ इनवर्सिटी को नाम.....सागर नोनो बनो

सागर किले में पुलिस कालेज
जहाँ से निकरे थानेदार.....सागर नोनो बनो
(चुन्नीलाल जी द्वारा प्राप्त)

प्रस्तुत गीत में बुंदेलखंड के जिले तथा उन जिलों में उपस्थित विशेष स्थलों का उल्लेख किया गया है यथा टीकमगढ़ का शीश महल, ओरछा का राम लला का मंदिर, छतरपुर का आकाशवाणी केंद्र, पन्ना की हीरा की खदान, भगवान कृष्ण का जुगलकिशोर रूप, खजुराहो के विश्व प्रसिध्द मंदिर, दमोह के सीमेंट फैक्ट्री, बांदकपुर के भगवान शिव का मंदिर, सागर की डॉ. हरिसिंह गौर यूनिवर्सिटी, और सागर का पुलिस कॉलेज आदि। इस प्रकार ये संपूर्ण गीत बुंदेलखंड की विशेषताओं से भरा हुआ है।

<hej tkfr ij vk/kkfjr xhr&

ढीमर करन लगो रोजगार
गांव गांव में तला खुदे है।
ओइ में लगे सिंगारे अपार.....ढीमर करन लगे
ओइ तला के तोड़े सिंगारे।
अरे ओइ की खोदी मुरार.....ढीमर करन लगे
(परसादी पटेल सागर)

इस गीत में ढीमर जाति के व्यवसाय की चर्चा की गई है कि किस प्रकार इस जाति के लोग तालाब में उत्पन्न चीजों का उपयोग करके अपने जीवन का यापन करते हैं।

पानी को रोजगार अपन को पानी को रोजगार
ओइ पानी में मरे मछरिया
अरे ओइ में खोदें मुरार..... पानी को
ओइ पानी से खर्चा चलत है
ओइ से पजे हजार.....पानी को
बिन पानी सबरो जग सुनो
मन में करो विचार धना तुम..... पानी को
ओइ पानी में पजे सिंगारे
रुपया बने हजार.....पानी को

(परसादी पटेल)

इस ढिमरयाई गीत में भी इस जाति के जल से सम्बंधित व्यवसाय की चर्चा की गई है।

का गत कहें बरौनी रात में सुनो बरौआ बात री।
अरे हमें मछरिया मारके तुम जाहो बेला ताल री।।
वंशी में बिद गई वाम।
बरौनी घरे चलो।।
काटों पटोला जाल में विद गयो।
हो गयो अपनों काम..... बरौनी घरे चलो
सिंगन मछरिया बिद गई जाल में
ले गयो बरौआ कुलाट..... बरौनी घरे चलो
कहे बरौनी सुनले बरौआ
अरे एकइ में हो गओ काम..... बरौनी घरे चलो
भोले बरौआ से के रइ बरौनी
काये परे उकतात..... बरौनी घरे चलो

प्रस्तुत गीत में बरौआ द्वारा मछली पकड़े जाने पर अपनी पत्नी को अपनी प्रसन्न्ता को व्यक्त करते हुए बोलता है कि आज का अपना काम हो गया अब घर चलते है और दोनों खुशी खुशी घर लौट जाते हैं ।

ढीमर घर बालक भये और धरें मुड़ी पे जाल।
और जल की मछरिया कहे मोरे जी खो उपज गए काल।
धरे कन्धा पे जाल बरौआ किते चले।
धरे मुड़ी पे जाल मछरिया मारन चले।।
खोले जाल हाथ में पो लये।
धरी कंधा पे खेप.....बरौआ किते चले
हलकी बड्डी सबरी बिदो लई।
धर लइ झौला बटोर.....बरौआ किते चले
मार मछरिया बरौ घर आये।
मोड़ी मोड़ो के खुल गए भाग बिद गई जल मछरी।
बेटा टेरो मतारी खो आज छोंक दये जल मछली।
ल्याओ लहसुन प्याज छोंक दये जल मछरी।
बेटा ल्याओ कुचौये चार चीख लये जल मछरी।
मार मछरिया बजारे ले गये।
सो चलन लगो परिवार.....बरौआ किते चले

(चुन्नीलाल रैकबार कर्रा पुर)

प्रस्तुत गीत में मछली पकड़ते जाते हुए ढीमर की संपूर्ण झांकी प्रस्तुत है। ढीमर अपने कंधे मछली पकड़ने वाला जाल रख कर मछली पकड़ने को निकलता है। वहाँ उसे छोटी बड़ी जो भी मछली मिली सब पकड़ ली और अपने घर आ गए। उनके बच्चे मछलियों को देख कर खुश हो गए तो ढीमर अपने बच्चों को बोलता है कि अपनी माँ को बुलाओ आज मैं मछली बनाता हूँ। मछली बनने के बाद पूरे परिवार ने खाना

खाया और बाकी बची हुई मछलिया बाजार में बेचकर खुशी खुशी अपना परिवहन करने लगा।

loky tcko d Lo#i e f<ej;kbl xhr

जल्दी बना कलेऊ ये कलुआ की बाई।
कैसे बनाये कलेऊ के कलुआ के दद्दा।।
आज रात पानी गिरो।
और नदी दोउ डिग जाये।।
और वंशी लेके जेहों में।
वामे ल्याहें फसाये।।
अरे वामे ल्याहें फसाये ये कलुआ की बाई
सैंया चूलो ने जलो
डरी हे बासी राख।।
और रोटी बासी ने बची।
अरे तुमाय लाक।।
अरे तुमाय लाक ये कलुआ के दद्दा....
सुन प्यारी संसार में।
केवल करम प्रधान।।
और जॉन काम जीखो मिलो।
करो ध्यान लगाएं।।
करो ध्यान लगाएं ये कलुआ की बाई.....
लड़का बिटिया सात।
सो कैसे करें जे काम।।

और नाखुआंन में मोरे प्राण हैं।
तुम्हें सूझ रइ वाम।।
तुम्हें सूझ रही वाम ये कलुआ के दद्दा......
सुन प्यारी जब ल्याओ मै।
पटक पटोला वाम।।
और तुरत हाट में बेचके।
देन्हे तोहे दाम।।
देहे तोहे दाम ये कलुआ की बाई....

प्रस्तुत ढिमरयाई सवाल जवाव के रूप में है। इसमें भी ढीमर के मछली पकड़ने जाने ले संवाद हैं जिसे वह अपनी पत्नी के साथ करता है। वह अपनी पत्नी से कहता है कि जल्दी खाना बना दो मछली पकड़ने जाना है। पत्नी के मना करने पर वह उसे मछली लाने का बोलता है जिससे वो खुश हो जाती है।

J`xkfjd f<ej;kbZ xhr

तेज धार तलवार से पेने बने बरौनी के नैना।
कोयल से मीठे बैना।।
जाओ अपनों काम करो तुम छैला हमसे उलझो न।
उलझो तो फिर सुल्झो न।।
कजरा बिन अंखियां कजरारी।
जैसी विष की बुझी कटारी।
जी से करतीं बार करारी।
बीच की तो बात पता न।
अगल बगल की बरके न........कोयल से मीठे बैना।

कजरा लगाबें चाहे लाली।
दिलबालों खो है दिलवाली।
जलबे बारों खो नागिन कारी।
मोरो काटो ने पानी मांगत।
विद जेहों तो बच हो न.....उलझो तो फिर सुल्झो
पानी को रोजगार हमारो
बिना पूंजी के धंधो प्यारो।
तला पे जाये मछरिया मारो।
खोदो मुरार और चाय की सुरुआ।
लेलो पलीता और थैला..... कोयल से मीठे बैना।

(किशन पटेल बदोना)

इस गीत में पति अपनी आँखों और बातों की तारीफ करता है । पत्नी भी उसी चुटीले अंदाज में अपने पति को जबाब देती है कि मेरी आँखें नागिन के सामान हैं और मेरा डसा हुआ पानी भी नहीं मांगता। इस प्रकार हास्य विनोद करते हुए वो मछली पकड़ने चले जाते हैं।

gkL; j l ç/kku f<ej ;kb xhr

हास्य रस पढ़ें गीतों में विनोद भरे भावों का दर्शन होता है । इस विनोद के माध्यम से किसी वर्त्मान परिस्थिति पर व्यंगय होता है तो कहीं सामाजिक रिस्तों में सामाजिक हास्य विनोद का चित्रण होता है। उदाहरण निम्न प्रकार है।

अरे हम तो बरातें जेहे।
कक्का पैदल ने जेहे।।
हम गाड़ी से जेहे ।

मम्मा पैदल ने जेहे।।
जोन गाड़ी में मोमफली मिलत है।
फूँक फूँक के खेंहे.....पैदल ने जेहे।।
जोन गाड़ी में चाय मिलत है।
फूँक फूँक के पींहे..... पैदल ने जेहे।।
जोन गाड़ी में टी सी मिलत है।
टिकट कटाके जेहे.....पैदल ने जेहे।।

(लीला घर रैकबार सागर)

प्रस्तुत गीत में ग्रामीण परिवेश में विवाह में सम्मलित होने की उत्सुकता को दर्शाया गया हैं जिसमें एक व्यक्ति बारात जाने की अपनी विभिन्न्न इच्छाएं व्यक्त करता है कि वह रेल से जाना चाहता है। उसमें बैठके मुंगफली और चाय खाना चाहता है।

अरे हो राओं मछरिया को ब्याव ।
तलैया में मड़वा गड़ो।।
अरे मुंडा दूला बन गओ।
बांदे बैठो मौर।।
जलर बन गई दुलैया।
चली लिवा के सौर।।
तलैया में मड़वा गड़ो.....
अरे कतला, रोहू,बामरो,
कटुआ,बटुआ,वाम।
बाजिया नाचे बारात में।।
दे दये आये इनाम।
तलैया में मड़वा गड़ो.....

(रामगोपाल पटेल सागर)

प्रस्तुत गीत में हास्य रस का उद्घाटन हुआ है जिसमें मछली के विवाह की कल्पना की गई है। विभिन्न मछलियों के नाम गिना कर उनको बाराती के रूप में नाचते हुए कल्पना की गई है और जलर मछली को दुल्हन के रूप में दिखाया गया है।

चलो नर्मदा पार जहां पे मेला लागो।
अरे मम्मा हमारे समर के निकर गये
मायीं निकर ने पाई रिपत ने तुम परिओ
नादिया में लगी है काई रिपत ने तुम परिओ।
कक्का हमारे समर के निकर गए ।
काकी निकर ने पाई रिपट ने तुम परिओ।।

(जुगलकिशोर नामदेव सागर)

इस गीत में हास्य विनोद का चित्रण किया गया है। जहाँ मामी मामा, कक्का काकि नर्मदा पार करते है। तो भांजा मजाक बनाते हुए कहता है कि मेरे मामा तो आराम से निकल गए परन्तु मामी खिसक के गिर गई।

/kkfed dFkkvk ij vk/kkfjr xhr

धार्मिक गीतों में हमारे धर्म से जुडी कथाओं पर कविता होती है जो किसी भी ईश्वर के स्वरुप पर आधारित हो सकती है यथा शिव ,राम,कृष्ण,हनुमान जी, गणेश जी, दुर्गा जी आदि।

अयोध्या से आये भगवान कामता डेरा डरे।
मैं देखयाइ गोरी गुइंया रे।
पार्वती के सैंया महादेव।।

सबरे तन में रख लगाये।
विच्छू छदो करेजा।।
मैं देखयाई गोरी.....
धमना सांप की लगी लंगोटी।
करिया चढ़ो करैया।।
मैं देखयाइ गोरी....

प्रस्तुत गीत में भगवान शिव के विवाह के समय भगवान शिव के स्वरुप का वर्णन किया गया है।कि किस प्रकार शिव जी सांप तथा विछुओं से सुशोभित होकर उनको धारण करके विवाह के लिए निकले हैं।

मोरी नैया में दशरथ राम ।
गंगा मैया धीरे वहो।।
कोना की नैया, कोना की गंगा।
कोना के लक्षमण राम।।
गंगा मैया धीरे वहो.....
केवट की नैया,भागीरथ की गंगा।
दशरथ के लक्षमन राम।।
गंगा मैया धीरे वहो.....
काय खो आ गई नैया, काये खो गंगा।
काय खो लक्षमन राम।।
गंगा मैया धीरे वहो.....
पार करे नैया और पाप धोवे गंगा।
भक्तो के लक्षमन राम।।
गंगा मैया धीरे वहो....

(लीलाधर रैंकवार सागर)

इस गीत में केवट प्रसंग का वर्णन मिलता है।

ukjh pfj= ij vk/kkfjr xhr

नारी चरित्र पर आधारित गीतों में नारी के जीवन से आधारित, समाज में नारियों की सामाजिक स्थिति, उनके स्वाभाव, उनके पहनावे उनके बोली–वानी आदि का वर्णन मिलता है । कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं–

अरे नारी नारी जिन करो,नारी हसी न खेल।
नारी से नर उपजे है, नारी घर की बेल।।
घर में नार लगे प्यारी।
ये से चले दुनिया दारी।।
सबसे पेले उठे सबेरे।
झारा बटोरी कर डारी।।
ये से चले दुनिया दारी.....
हो गई दुफर जब रोटी बनाबे।
सबको परसत है थारी।।
ये से चले दुनिया दारी.....
दिन लोटे लो काम करत है।
बोई फिकर ओखो भरी।।
ये से चली दुनिया दारी.....
दिन और रात फिकर में रेबे।
ये से कहाबे घर बारी।।
ये से चले दुनियादारी....

(चुन्नीलाल रैकबार कर्रापुर)

प्रस्तुत गीत में गावों में महिलाओं द्वारा किये जाने बाले कार्यों, उसके द्वारा किये गए परिश्रम का उल्लेख है कि महिला घर की नींव होती है। इसी महिला से पुरुष

समाज की उत्पत्ति होती है। नारी से ही समस्त संसार चल रहा है। वह घर में सबसे पहले जागती है और घर की साफ सफाई करती है। फिर दोपहर में सबके लिए खाना बनाती है सभी को परोस के खिलाती है। पूरे दिन काम करती है और फिर भी उसे अगले दिन के काम की चिंता रहती है। इन्हीं सब गुणों के कारण यह घरवाली की उपाधि से सम्मानित किया गया है।

इस प्रकार बुंदेलखंड के ढिमरयाई गीत जीवन के प्रत्येक पक्ष से जुड़ा हुआ है साथ ही परम्पराओं की जड़ें भी इसमें स्पष्ट देखी जा सकती है। वर्तमान से लेकर प्राचीन परंपरा सभी विषय इसमें समाहित है जो आज भी ग्रामीण में निवास करने वाले इनके जानकार जाति विशेषज्ञ के द्वारा अवसर पर गाया और नाचा जाता है।

कानड़ा नृत्य

कानड़ा या काड़रा नृत्य कान्हा अर्थात कृष्ण का स्थानीय नाम कान्हा से कानड़ा हो गया प्रतीत होता हैं। ब्रज में कृष्ण को कानड़ा कहते हैं। बुंदेलखंड में उसी प्रभाव से कृष्ण से सम्बंधित नृत्य का नाम कानड़ा या काड़रा पड़ा ।

डॉ० नर्मदा प्रसाद गुप्त के अनुसार – "इस नृत्य का उत्कर्ष मध्यकाल में स्पष्ट हैं। कृष्ण विषयक कथा गीतों का प्रचलन 15वीं शती में हुआ था, तभी से कानड़ा नृत्य लोक में जन्मा था और मध्यकाल के पूर्वार्ध में पल–पुसकर यौवन को प्राप्त हुआ फिर 20वीं शती के प्रथम दो दशकों तक उसका उत्कर्ष काल रहा, बाद में धीरे–धीरे अवनत होता हुआ लुप्त होने के कगार पर आ गया।

यह मूलतः जातिगत नृत्य हैं. धोबी समाज के लोग इसे करते है। इसलिए कहीं–कहीं ये नृत्य धुबियाई नृत्य भी कहलाता है। इस समाज में वैवाहिक अवसरों पर कानड़ा किया जाता है बल्कि कुछ समय पूर्व तक तो विवाहों में यह अनिवार्य रूप से किया जाता रहा है। वर्तमान में यह प्रायः लुप्तप्राय नृत्य हैं। समाज की वैवाहिक रस्मों में जैसे मेहर का पानी भरने अथवा दुल्हे की रछवाई निकलने पर, द्वारचार, टीका, भाँवर पड़ाई, विदाई आदि अवसरों पर, वैवाहिक संस्कारों के अलावा जन्म के समय भी इस नृत्य का आयोजन होता था ।

कानड़ा पुरुष प्रधान नृत्य है – कानड़ा नाचने वाला प्रधान नर्तक होता है। कानड़ा का विशेष वाना (पोषाक) होता है। नृत्य में रूचि रखने वाले युवक को परम्परानुसार वाना दे दिया जाता हैं।

नृत्य की पोषाक या वाना मध्यकाल की प्रतीत होती है, क्योंकि उस समय राजे– महाराजे इसी तरह के बागे पहनते थे। नर्तक सफेद रंग का कलीदार बागा धारण करता है। वह सिर पर राजसी पगड़ी या साफा पहनता हैं। पगड़ी पर कलगी, कन्धों पर रंगीन कलात्मक कंघिया, गले में ताबीज, कमर में फैंटा, कंधे से कमर तक

सेली, कमर में रंग–बिरंगे बटुए लटकते रहते हैं। दोनों बाजुओं में बाजूबंद, पैरों में बड़े–बड़े घुंघरू, चेहरे पर हल्का मेकप, आँखों में काजल या सुरमा। नर्तक सुसज्जित होकर ऐसा प्रतीत होता है कि उस नर्तक के रूप में कोई राजा– महाराजा हो अथवा मोरपंख लगाकर कृष्ण हो। नर्तक नृत्य के लिए सुसज्जित होता है तो उसे कानड़ा बनना कहा जाता है।

डॉ० श्रीमती वंदना जैन के अनुसार इस नृत्य को फिरकी के सामान घूम–घूमकर नाचा जाता है। घेरे को बुन्देली में कोण भरना कहा जाता है और इस नृत्य को भी घेरे में नाचते हैं। इसलिए इस नृत्य का नाम काड़रा नृत्य पड़ा।

काड़रा नृत्य में नाचने वाला, महि बिलौने की कड़निया जो घेर–घेर घुमती है, के समान घूम–घूमकर नृत्य करता है। काड़रा नृत्य का प्रमुख वाद्य सारंगी या केकड़िया हैं। इस वाद्य को काड़रा नर्तक स्वयं बजाता है। मुख्य गायन भी वही करता हैं। अन्य वाद्यों में खंजड़ी, मृदंग, तारें, झूला तथा लोटा प्रयुक्त होते हैं।

dkuMk ykduR; e ç;ä ykdxhr

कानड़ा लोकनृत्य बुंदेलखंड के उन प्रचलित लोकनृत्यों में से जिसका गायन अपना अलग स्वरुप रखता है। वैसे तो कानड़ा में भी लगभग सभी प्रकार के लोकगायन को गाया जाता है जो कि बुंदेलखंड में प्रचलित एवं लोक में स्वीकार्य है परंतु कथा गीत विशेष रूप से गाया जाता है। नृत्य में गायन का आरम्भ सुमरनी से होता है, गायन में स्वर, सारंगी, के साथ बनता है एवं गायन मध्य लय से प्रारंभ होता है। गायन के साथ ही नृत्य एवं संगीत आरंभ हो जाता है। नर्तक के एक हाथ में सारंगी होती है और दूसरे हाथ में गज होता है। ये वाद्य गायन में संगीत तथा लय भर देता है और कानड़ा नृत्य का मुख्य गायन भी यही नर्तक करता है, हाथ में सारंगी एवं गज होने के कारण हाथों की मुद्राएं कम ही बनती है। पैरों द्वारा लय तथा ताल को साथ दिया जाता

है। पैरों की मुद्राएं एवं चकरी इतनी मनमोहक होती है कि दर्शक मंत्रमुक्त से रह जाते है। नर्तक के शरीर पर घेरदार वागा नृत्य की मुद्राओं में सौंदर्य भर देता है।

गायक जब कथा गायन करता है तब बीच–बीच में उसे संवाद भी बोलने पड़ते हैं। दोहा, साखी, विरहा, गारी, भजन, भगत प्रायः सभी तरह के गायन इस नृत्य में किया जाता है। विभिन्न श्रृंगार, हास्य, वीर, शांत, करूण, रसयुक्त लोकगीत, धुनों के आधार पर विरहा, रामपुरिया, बधाई, आदि नामों से इस नृत्य को जाना जाता है। अलग अलग अवसरों के अलग–अलग गीत हैं। गीतों में शिव पार्वती, राम–कृष्ण, भक्त प्रह्लाद, हरिश्चन्द्र, राजा–कर्ण, ढोला, सोरंगा, हरदौल आदि की गायकी भी कानड़ा में गायी जाती है। मैहर के गीत, राछबाई के गीत, भाँवर के गीत, भजन, आदि विभिन्न शैलियों का लोकगायन कानड़ा नृत्य में किया जाता है कुछ उदहारण निम्न प्रकार हैं।

dFkk xhr

भौजी ने करा दय विष पान बुंदेला है लाड़ले
ओरछा नगर के राजा बुंदेला
जग में इनकी बड़ी है शान .. बुंदेला है लाड़ले
राजा जुझार खों बात लखा दई
देवर खों करा दय विष पान... बुंदेला है लाड़ले
कुंजावती रो दृ रो के केवे
वीरन रखियो मोरी शान ... बुंदेला है लाड़ले
मंडुवा नेंचें पंगत बैठी
दूल्हा ठाने हैं ऐसी ठान ... बुंदेला है लाड़ले
सबई जनों खों दर्शन दीन्हें
ऐसी गाथा इनकी महान .... बुंदेला है लाड़ले
लाला हरदौल के बने चोंतरा
जा रखियो 'बिहारी' की आन .... बुंदेला है लाड़ले

प्रस्तुत कथा गीत में बुंदेलखंड के लोक देवता हरदौल की जीवन गाथा का दर्शन मिलता हैं, जिसमें यह उल्लेख मिलता है कि भाभी के द्वारा विष दिए जाने के कारण मृत्यु होने पर भी अपनी बहन कुंजावती की शान को बनाये रखने के लिए हरदौल सभी को दर्शन देते हैं और अपनी बहन की इच्छाओं को पूरा करते हैं। हरदौल की इसी शान का गुणगान इस कथा गीत में हुआ हैं।

e¡yk xhr

मेला देखन खों चलो रे मेला देखन खों चलो ।
बुन्देली मेला भरो है, देखन खों चलो।।

डुकरा और डुकरियें जा रई, जा रय बिन्ना भैया ।
पुरा परोस के सबरे जा रय, संगे जा रई मैया।।

चकरी, भौंरा और चकुलियें, डबला और डबुलियें।
सबरे बिक रय हैं मेला में, ले रय लोग लुगइयें।।

रइया, फागे दिवारी हो रई और ठनी हैं राई।
वरन–वरन की लगी दुकानें,बिक रई खूब मिठाई।।

बुन्देली गीतों को हो रव, देखो खूब धमाका।
मिरदंग और नगड़िया बज रय हो रय खूब छमाका।।

ठेलम ठेला भीड़ मची है, देखो गजब की भारी।
बुन्देली को मजा अलग है के रय साँची "बिहारी"।।

प्रस्तुत गीत में बुंदेलखंड में भरने वाले मेलों का दर्शन मिलता हैं। गीत में उल्लेख है कि मेला को देखने के लिए घर के बूढ़े से लेकर बच्चे तक सभी जाते हैं । मेले में सभी प्रकार के झूले है एवं बुंदेलखंड में प्रचलित लोकनृत्यों की छटा भी मेले में दिखाई पड़ रही हैं। राई आदि लोकप्रिय नृत्यों पर नगड़िया की सुन्दर थाप भी बज रही हैं, जिसने मेले में सुन्दर माहौल बना दिया है।

gkL; xhr

सांची कहूं तोसे गुइयां, मिले मोखों ऐसे जे सैंया

घर के भीतर सेज लगाई ।
बाहर दे रये घुरकैयां..... मिले मोखों ऐसे जे सैंया
मोरें मन की जे बात न जाने।
का करे राम गुसईयां ..... मिले मोखों ऐसे जे सैंया
संग की सहेली के दो–दो हो गये।
मोरे कछू अब नैंया ..... मिले मोखों ऐसे जे सैंया
दोई कुल की रीत निभाने ।
जैसे पिंजरा में टुइयां..... मिले मोखों ऐसे जे सैंया

प्रस्तुत गीत में हास्यरस की उत्त्पति करते हुए अपने भोले–भाले पति के बारे में अपनी सखी से चर्चा करती हैं।

खूद खात जे देरी , आँगन में लगी बेरी
मना करो तो मानत नैया,
लड़का बिटिया जानत नैया

भोरई से लग जात फेरी ... आँगन में लगी
फतरा मारे खपरा फूटे,
पुरा परोस के मोसे रूठे
गांव है मोरो जो खेरी ... आँगन में लगी
संजा सवेरे दएं हुड़रऊआ,
उनके संगे होगव दऊआ
ऐसी कठिन भई जा बेरी ... आँगन में लगी
कच्चे पक्के सबई झुरा रये,
थेला भर भर जे ले जा रऐ
करत नैया अब देरी ... आँगन में लगी

प्रस्तुत हास्य गीत में ग्रामीण परिवेश में बच्चे द्वारा बेर के लिए उत्सुकता को दर्शाया गया हैं जिसमें वे न दिन देखते है, न रात देखते है, न कच्चा देखते है और न पक्का देखते है और ना ही उन्हें घर के खपडों की चिंता होती हैं। बस उन्हें तो जहाँ भी बेर दिखे, पत्थर मार कर तोड़ना ही हैं।

toukj xkjh

मोरी मैया के अंगना में होवे जेवनार
परसें वीरा लंगडुवा

ब्रह्मा जी आये, सब देवन भी आये
नारद ने अपनी बजाई खड़तार ... परसें वीरा लंगडुवा

चंदन पटरी डारे बैठ का
मैया की कृपा है अपरम्पार ... परसें वीरा लंगडुवा

पातर परस दई दोंना परस दये
मिर्ची के संगे परसो अचार ... परसें वीरा लंगडुवा

भात परस दओ कड़ी परस दई
हींग को जे में लगो है बघार ... परसें वीरा लंगडुवा

रोटी परस दई सब्जी परस दई
दोना में परसी जा राहर की दार ... परसें वीरा लंगडुवा

बरा जे परसे पापड़ जे परसे
ऊपर से शक्कर की दई मुठी डार ... परसें वीरा लंगडुवा

इस गीत में बुंदेलखंड की उस परम्परा का उल्लेख किया गया हैं जिसमें बारातियों को खाना खिलाते समय प्रेम भरी गाली दी जाती हैं।

nknjk xhr

बरसे जा बदरिया ओ मोरे रामा

रिमझिम रिमझिम मेघा बरसे
जा भीजै चुनरिया ... ओ मोरे रामा

मोरे घर जे दूर परत है.
संगे ननद पुतरिया ... ओ मोरे रामा

नदिया नाले खूबई वह रय
संगे नईया सावरिया ... ओ मोरे रामा

बादल गरजे बिजली चमके
नस नस में चमके बिजुरिया ... ओ मोरे रामा

इस गीत में वर्षा के मौसम का उल्लेख किया गया है जिसमें एक भाभी अपनी ननद के साथ बारिश में फंस गयी हैं, और न ही उसके पास नाव हैं, न ही पति हैं। मुसलाधार बारिश के साथ बिजली भी कड़क रही हैं जिससे वह और भी डर जाती हैं।

Hkxr xhr

मोरी नैया लगा दइयो पार भवानी
जग जननी जग तारनी

दुख संकट में घिर गई नैया
भक्तों को करो उद्धार ... भवानी जग

मैया तुम्हारो भरोसो है भारी
मोरी विनती है बारम्बार ... भवानी जग

मोरी नईया उवारो भव से तुम
आके कर दइयो बेडा पार ... भवानी जग

प्रस्तुत गीत में भक्त माँ दुर्गा से उसपर कृपा करने की प्रार्थना करता हैं। भक्त कहता है कि मेरी जीवन रूपी नैया इस भवसागर में मेरी नैया फंस गई है, अब आप पर ही भरोसा है कि आप ही कृपा करके पार लगाये।

lhrk Lo;aoj

आज की लीपा पोती कोना करि है।
कोना ने धनुष उठाए भले जू।।
आज की लीपा पोती सीता करि है।
उनै ने धनुष उठाये भले जू।।
राजा जनक जू खो शोश भये है।
बेटी तो हो गई वर जोग भले जू।।
जाओ से नौआ अब जइयो मोरे वमना।
बेटी खो घर वर ढूंढो भले जू।।
आगम ढूढे उनने पश्चिम ढूंढे।
ढिग धर ढूंढे गुजरात भले जू।।
राजा जनक ने यज्ञ रचे हैं।
दोरे में धनुष धराय भले जू।।
देशन देशन पाती जे भेजी।
ओइ पे लिखी है निशानी भले जू।।
देश देश के जे भूप जुड़े हैं।
बल सबने आजमाये।।

(राम किशन रजक बदोना)

प्रस्तुत गीत में सीता स्वयंबर की झांकी को दिखाया गया है कि किस प्रकार सीता जी ने आराम से शिव जी का धनुष उठा लिया जिसे देख कर जनक जी को चिंता सताने लगी की अब बिटिया बड़ी हो गई है और विवाह योग्य हो गई है। यह सोच कर वह अपने नाउ को भेजकर सीता के लिए वर ढूढने को कहते हैं और सीता के लिए स्वयंबर रचाते है जिसमे देश विदेश के राजाओं को निमंत्रण भेजते हैं परंतु देश विदेश के सूर वीर राजा भी धनुष को नहीं हिला पाये। यह संपूर्ण झांकी इस गीत में दर्शायी गई है।

jke&lhrk xhr

कैसी घड़ी जा आई रे, सिया मोरी वन में हरी गई

भेष बदल के रावण आओ,
भिक्षा दे दो माई रे ... सिया मोरी

रथ पे देखो सिया लय जावे,
सुनियो मोरी रघुराई रे ... सिया मोरी

गिद्ध जटायु रथ खों रोके,
दोनो पंख फैलाई रे ... सिया मोरी

राम लखन दोऊ भैया रोवे
अंखियन नीर बहाई रे ... सिया मोरी

प्रस्तुत गीत में सीता हरण का उल्लेख हैं, जिसमें रावण के भेष बदल के आने से लेकर सीता माता को रथ में ले जाना, जटायु का रावण से संघर्ष तथा राम–लक्ष्मण का दुख संताप में अश्रु बहाना आदि प्रसंगों का उल्लेख हैं।

dk;k xhr

अंगना में तनक दिखानी,
चिरैया जाने कहां खों हिरानी

तालों पे ढूंढी तलैया पे ढूंढी
अबई से गिर गव पानी .... चिरैया जाने

खेतो में ढूंढी खलिहानों में ढूंढी
सारी सागर में छानी ... चिरैया जाने

बागों में ढूंढी बगीचों में ढूंढी
हमखो भई हैरानी ... चिरैया जाने

देखत देखत अंखियां थक गई
ऐंसी चिरैया मस्तानी ... चिरैया जाने

'बिहारी' चिरैया को नईयां भरोसो
एक दिना जा उड़ जानी ... चिरैया जाने

प्रस्तुत गीत में आत्मा को चिरैया की संज्ञा दी गई है, जो न दिखाई देती है न मिलती हैं पर इस शरीर को छोड़कर कब उड़ जाए, कोई भरोसा नहीं हैं।

तुमतो टैं टैं करत राय गंगा राम
उमरिया खो दई पिंजरा में।।
पांच तत्त्व को बनो जो पिंजरा ।
जे में रेत प्राण ..... उमरिया खो दई पिंजरा में
पेल कहत ते हरी खों भेज हैं।
भज हैं बारंबार।
और गरभ मास से बाहर आ गए
बिसर गए हरिनाम..... उमरिया खो दई पिंजरा।।
हाथ जोड़कर विनती करत ते अबकी बेर उबारो।
अरे अबकी बार उबारो सत गुरु।
बहुर ने आन्हें घाट..... उमरिया खो दई पिंजरा में।
सात सखी जुर चली बजारे।
एक से एक सायानी।।
उठ गओ हाट मिलो ने सौदा।
फिर किसे पछ्तात..... उमरिया खो दई पिंजरा में

प्रस्तुत गीत में जीवन के सत्य को उद्घाटित किया गया है कि राम नाम ही सत्य है जिसको समय से भजना चाहिए नहीं तो मनुष्य पछ्ताता रह जायेगा।

माता की कुखिओ में कौल करो तो।
जब केसों लगो तो।।
माता ने जब भार सहो तो।
गरब मास से आ गए।।

बिसर गए हरिनाम।
जब केसों लागो तो....
गरब मास से आ गए धरती पे।।
परो परो जब रो तो ।
जब केसों लगो तो....
धरती से गोदी में उठा लये।
माता की गोदी में खेल राओं तो।
जब केसों लागो तो...
कछु दिनों में आ गई जवानी।
सो खड़ो खड़ो तिरियो खों छांक राओं तो।
जब केसों लगो तो.....
कछु दिनों में आ गओ बुढापो।
पलका पे परो परो खांश राओं तो।।
जब केसों लगो तो.....
जम के दूत दुआरे आ गए।
विरथा में जनम जब निकाल दओ तो।
जब केसों लगो तो.....

(रामकिशन रजक ,बदोना)

प्रस्तुत गीत में भी जीवन के विभिन्न अवस्था में किस प्रकार मनुष्य अपने जीवन को ऐसे ही व्यर्थ निकाल देता की चर्चा हुई है।

fux.k xhr

अपनों खों जे अपने काटे, ऐसी है, दुनियाँ दारी

सुनो सकल सारे ज्ञानी

लकड़ी मिल गई जब लोहे से
काट काट करे मैदानी ... सुनो सकल सारे

जस करे अप जस होत है
हमखों होवे हैरानी ... सुनो सकल सारे

काल के फंदे में सब जकड़े,
राम नाम अब नई ठानी ... सुनो सकल सारे

राजा हरिश्चंद छोड़ के आ गये
अपनी देखो रजधानी ... सुनो सकल सारे
चेत सके तो चेत ले मूरख
नाहक खोवे जिन्दगानी ... सुनो सकल सारे

प्रस्तुत गीत में जीवन के सत्य का उदघाटन किया गया हैं ।

f'k&fookg xhr

काय देखी नैयारी, काय देखी नैयारी
कैसे कैसे आये बराती देखी नैया री

लूला लंगड़ा और त्रिर्पटा, काना कुवड़ा आये
अपटा– चपटा बूचा थुदुआ, मुछ मुंडा संग आये ... काय देखी नैयारी

बिच्छू ततैया उर बरैया , गले में डारे भुजंग
मृग छाला से तन पे लपेटे, जटो में बह रई गंग ... काय देखी नैयारी

भूत दृ प्रेत सब संग में आये, संग में डाकन आई
खब्बीसा संग लोटे पीटे, देत पलीत दुहाई ... काय देखी नैयारी

ढपला ढोल बजे रमतूला, बजे मंजीरा घुंघरू
नारद जी की बीना बज रई, भोले जी की डमरू ... काय देखी नैयारी

देखे बराती सब बेढंगे, गारी गायें लुगैयाँ
कहे बिहारी भोले त्रिपुरारी कोई उससो नैयां ... काय देखी नैयारी

इस गीत में शिव जी की अनोखी बारात का चित्रण किया गया हैं, जिसमें किस प्रकार से डरावने और भयानक बराती आये हैं का उल्लेख मिलता हैं । शिव की बारात में भूत–प्रेत, डायन , लूले– लंगड़े, बिच्छु, ततैया, साँप सभी आये हुए हैं। भगवान् शिव का वेष भी बड़ा विचित्र हैं। गले में मुंड की माला धारण किये हुए है, शरीर पर मृगछाला धारण किये हुए हैं और जटाओं से गंगा बह रही हैं। ऐसी विचित्र बारात को देख कर वहाँ की औरतें गारी गा रही हैं, परन्तु उस भयानक रूप के बाद भी शिव जी जैसा कोई सुन्दर नहीं दिखता ।

इस प्रकार कानड़ा नृत्य में जीवन के प्रत्येक पहलुओं से जुड़े गीतों को गाया जाता है। कानड़ा नृत्य में 36 रागों को गाया जा सकता है जो विवाह से लेकर मृत्यु किसी भी संस्कार अथवा जीवन की परिस्थितियों से सम्बंधित हो सकता है। परंतु मुख्य रूप से गाथा गीत तथा निर्गुण भजन इस नृत्य की विशेषता है।

अध्याय – चतुर्थ

Lojfyfi

c/kkbZ xhr

जनम लियो रघुरैया अवध में बाजे बधईया

कोना घरी में राम रघुरईया , कोना में किशन कन्हैया,

अवध में बाजे.....

घरी में राम रघुरईया , भादों में किशन कन्हैया,

अवध में बाजे.....

कोना घरे भए राम रघुईया , कोना के किशन कन्हैया ,

अवध में बाजे.....

दशरथ घरे भए राम रघुईया, नंद के किशन कन्हैया

अवध में बाजे.....

ताल– कहरवा

मात्रा– आठ

काली– एक

जन मलि यो रधु । रैया अ वध में ।

ग ग ग ग ग रे ग म । ग रे रे स रे स नि ।

बाजे व् धै या । को नाघ री के ।

स रे रे ग। रे स । स ग ग प प ।

राम रधु रै या । को नाके किश् न ।

म म प प म ग । ग ग ग ग रे म ।

कन्है याअ वध में । वाजे ब धै या।

ग ग रे रे स रे सनि । स रे रे ग रे स।

चौ ताध। री में । राम रधु रै या ।

स ग ग प प । म म प प म ग ।

भा दोंमें किश् नक । न्हैया अ वध में ।

ग ग ग ग रे मग । गरे रे स रे स नि ।

बाजे व् धै या । को ना घ रे भय ।

स रे रे। ग। रे स । स ग ग। प। प प ।

राम रघु रै या । को नाके किश। न।

म म प प म ग । ग ग ग ग रे म ।

कन्है या अ। वध में । बाजे ब धै या ।

ग ग रे रे स रे सनि । स रे रे ग रे स ।

दश रथघ रे भए । राम रघु रै या ।

सस ग ग ग प प । म म प प म ग ।

नन्द के किश् न क । न्हैया अ वध में ।

ग ग ग ग रे म । ग ग रे अ स रे सनि ।

बाजे व् धै या । जन मलि यो रघु ।

स रे रे ग रे स । ग ग। ग ग ग रे ग म ।

रै या अ वध में । बाजे व धै या ।

ग रे रे स रे स नि । स रे रे ग रे स ।

ऽऽ।

हारी रे बलिहारी रे राधा कन्हैया से हारी रे

कोउ कोउ सखियां झूठी के रई

राधा के संग बिहारी रे राधा कन्हैया से हारी रे

ताल – कहरवा

मात्रा – आठ

काली – दो

हाऽ रीऽ रेऽ बलि । हाऽ रीऽ रेऽ ऽऽ ।

स स स रे रे । स स नि नि ।

राधा कं हैया सेऽ । हाऽ रीऽ रेऽ ऽऽ ।

रे रे रे रे रे म । ग रे स स ।

कोऊ कोऊ सखि यां ऽ । झूऽ ठी ऽ के ऽ रइ ।

स स स स प प प । म म प प म ग ।

राऽ धाऽ केसं गबि । हाऽ रीऽ रेऽ ऽऽ ।

स स स स रे रे । स स नि नि ।

राधा क न्हैया सेऽ । हाऽ रीऽ रेऽ ऽऽ ।

रे रे रे रे रे म । ग रे स स ।

चुन रीऽ खों ऽ खें ऽ । चें ऽ मन मो ऽ हन ।

स स ग ग प प प । म म प प म ग ग ।

रा ऽ धा ऽ दे ऽ वे ऽ । गा ऽ री ऽ रे ऽऽ।

स स स रे रे । स स नि नि ।

रा ऽ धा क न्हैया सेऽ । हाऽ रीऽ रे ऽऽ ।

रे

रे रे रे रे म । ग रे स स ।

लाल रंग डारो गुलाबी रंग डारो और रंग डारो केसरिया
ये वंशी वारे सांवारिया

राधा जी गोरी, दीना की छोरी, भोरी सी डायरिया, अरे तू कारे सांवरिया

ताल – कहरवा

मात्रा– आठ

लाल रंग डारो ऽगु । लाबी रंग डाऽ रो ।

रे रे रे रे स स स । रे रे रे रे स स।

और रंग डाऽ राऽ । केऽ सरि याऽ ऽऽ।

स स स स स स । रे रे स नि नि ।

ये वंशी बा ऽ रे ऽ । सां वरि याऽ नै ।

रे रे रे स स । स स स स रे ।

ना ऽ वन्ध ला ऽ गेऽ । कहि योऽ होऽ चोऽ ।

स नि नि स रे रे स । स स स स रे।

लीबं धऽ लाऽ गेऽ । कहि योऽ होऽ ऽऽ।

स नि स रे रे स । स स स स स । ऽऽ ।

l\jk xhr

सैरो तो सैरो रे , अरे सब कोउ कहे हो

सैरो भलो ने होय , डांडला चूकत

अरे बहिया घल हो जाकी पीरा सही न जाय ।

ताल– कहरवा

मात्रा– आठ

सैऽ रो तो सैऽ रोऽ । ओऽ रेऽ ऽऽ ऽऽ ।

स ध स रे म । म म म म प।

सैऽ रो तो सैऽ रोऽ । अरे सब कोऊ कहे ।

गग रे स रे ग रे स स । रे रे स स ग ग सस।

हो ऽऽ ऽऽ ऽऽ । सैऽ रोभ लोऽ न ।

स स स स । ग रे रे ग रे ।

ऽहो ओऽ ओऽ यऽ । डाँड़ लाऽ चूऽ कत।

रेरे रे रे रे रे । ध स रे स ।

अरे वहि याऽ घल । होऽ ओऽ ओऽ जाकि।

रे रे स स रे स रे । स स स ग ग ।

पीऽ रास हीऽ नाऽ । ऽजा ऽऽ येऽ ऽऽ ।

ग रे रे ग रे । स स स स।

SS ।

ikb xk;u 'kyh

मरी जाऊ वारी छैल तोरे बोलो में
फरवन फरवन आ गई नर्मदा
पिडरी भींजे हिलोरो में
मरी जाऊ ....
पिडरन पिडरन आ गई नर्मदा
जगिये भींजे हिलोरे मे
मरी जाऊ ....
जगियन जगियन आ गई नर्मदा
अम्बर भींजे हिलोरो में
मरी जाऊ ....
छतियन –छतियन आ गई नरमदा
हरवा भींजे हिलोरो में
मरी जाऊ ....

ताल – दादरा

मात्रा– 6

मरी जाऊ बारी । छैल तोरे बोऽ ।

नि स ग ग ग ग। ग ग ग म स ।

लोंऽ मेंऽ मरी । जाऽ ऊऽ ऽफर।

रे स नि स । रे स। स स।

वन फर वन । आग इन रम।

ग ग प प प प । म प पम म म।

दाऽ ऽपिं ऽरी। भींऽ जेहि लोऽ।

ग ग ग ग ग । ग रे स से ।

रोऽ मेंऽ मरी । जाऽ उऽ ऽऽ।

रे स नि स। रे स स।

नोट– शेष अंतरे इसी प्रकार गाये जायेंगे।

f<ej ;kbl xhr

चलो नर्मदा पार जहां पे मेला लागो।
अरे मम्मा हमारे समर के निकर गये
मायीं निकर ने पाई रिपत ने तुम परिओ
नादिया में लगी है काई रिपत ने तुम परिओ।
कक्का हमारे समर के निकर गए ।
काकी निकर ने पाई रिपट ने तुम परिओ।।

ताल – दादरा

मात्रा –6

च ऽ लो न र म । दाऽ पाऽ र ज।

रे रे स नि स । रे स रे रे रे।

हाँ ऽ पेऽ मेंऽ ।. लाल गोऽ ऽऽ ।

स रे रे. । रे स स स ।

कक् का ह मारे । सऽ मर केनि।

स स स स म म । म ग रे रे रे ।

कर गए काऽ । कीनी कर नेऽ ।

रे स ग स रे । रे स नि स रे स।

पाऽ इ रि पट । ने ऽ तुम परि ।

रे रे स स स । रे रे रे रे रे ।

यो ऽ नदि याऽ । मेल गी ऽ हैऽ।

स रे स नि । नि नि नि स रे स।

काई रिऽ पट । नेऽ तुम परि।

रे रे नि निनि । रे रे रे रे रे।

योऽ।

स।

नोट– शेष अंतरा इसी प्रकार गए जायेंगे।

ukjrk xhr

आओ आओ अंगना

खो खो खेले संगना

सारे गाड़े फूल चढ़ाये ,महुआ के पेड़

महुआ सियाराम, आओ पानी पियाराम।

बेल की पत्ती, जनम जनम गौर ।

आये आये पत्ती।

पांच भैया पाड़े ,छटाई बैन गौर।

ताल – दादरा

मात्रा– 6

आओ। आओ अंग । ना खोखो खेलें।

स स स रे ग ग । रे स स रे रे ।

संग ना सारे । गाड़े फूल चढ़ाये।

ग ग रे स स । स रे गग ग रे रे।

महु आके पे । डे महु आ।

स स स रे ग ग । रे स स स रे।

सिया राम आओ । पानी पिया राम।

गग रे रे स स । स रे ग ग रे रे।

नोट– इसी प्रकार अन्य अंतरा भी गाये जायेंगे।

dkuMk xhr

आज की लीपा पोती कोना करि है।
कोना ने धनुष उठाए भले जू।।
आज की लीपा पोती सीता करि है।
उनै ने धनुष उठाये भले जू।।
राजा जनक जू खो शोश भये है।
बेटी तो हो गई वर जोग भले जू।।
जाओ से नौआ अब जइयो मोरे वमना।
बेटी खो घर वर ढूंढो भले जू।।
आगम ढूढे उनने पश्चिम ढूंढे।
ढिग धर ढूंढे गुजरात भले जू।।
राजा जनक ने यज्ञ रचे हैं।
दोरे में धनुष धराय भले जू।।
देशन देशन पाती जे भेजी।
ओइ पे लिखी है निशानी भले जू।।
देश देश के जे भूप जुड़े हैं।
बल सबने आजमाये।।

ताल– कहरवा

मात्रा– 8

आऽ जकी लीपा पोती । कौऽ नक रीऽ हैऽ।

ग रेस स ग ग रे स । ग ग स रे स ।

कौऽ ना ने ध नु ष ऊ । ठाऽ ए भ लेऽ जूऽ।

स स स स रे रे ग । स स स रे रे।

आऽ जकी लीपा पोती । सीऽ ताक रीऽ हैंऽ।

ग रे स स ग ग रे स । ग ग स रे स।

उन इने धनु षऊ । ठाऽ एभ लेऽ जूऽ।

स स स स स रे रे ग । स सस रे रे।

नोट – शेष अंतरा इसी प्रकार गाया जायेगा।

cjnh xhr

बरेदी गायन में दोहों को गाया जाता है। अतः इसमें किसी भी प्रकार की ताल का प्रयोग नहीं होता है।अतः इस शैली को मात्र सुर में बांधा जा सकता है।

dkyh– 5

आई दिवारी पावनी रे सो ल्याई दिया

स स म म म म म ध ध ध ध ध प प

में तेल रे

म म म म म ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

भोजी पटिया पार लो कितोरी मांग

स स म म म म म ध ध ध ध ध प प प

लहरिया लेइ रेरे।

प प प प म म म म ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ।